न्यायी हत्यारे

अल्बेयर कामू



अनुवाद

सच्चिदानंद सिन्हा

न्यायी हत्यारे

अल्बेयर कामू

रोशनाई प्रकाशन



नाटक : लेस जस्टेस (Les Justes) का मूल फ्रेंच से किया गया हिंदी अनुवाद

45.00 रुपए

रोशनाई प्रकाशन

काँचरापाड़ा, पश्चिम बंगाल

ISBN 81-88742-18-X

न्यायी हत्यारे

[लेस जस्टेस (Les Justes) का मूल फ्रेंच से किया गया हिंदी अनुवाद]

अल्बेयर कामू

अनुवाद
सच्चिदानंद सिन्हा

रोशनाई प्रकाशन
काँचरापाड़ा, पश्चिम बंगाल

ISBN 81-88742-18-X

मूल्य : 45. 00 रुपए

प्रथम संस्करण : फरवरी, 2008

प्रकाशक : रोशनाई प्रकाशन
212 सी. एल./ए. अशोक मित्र रोड (सरकस मैदान के पास)
काँचरापाड़ा, उत्तर 24 परगना, पश्चिम बंगाल।
पिन : 743145. फोन : 033-25850249, 32598980
e-mail : roshnaiprakashan@sify.com

मुद्रक : जयश्री प्रेस, 91/1B, बैठकखाना रोड, कोलकाता-700 009

पहला आवरण-चित्र : सुमन चौधरी, सौजन्य : आकृति आर्ट गैलरी, कोलकाता
पिछला आवरण-चित्र : जवाहर गोयल

Nyayi Hatyare : Hindi translation of the French play Les Justes by Albert Camus

अल्बेयर कामू : बीसवीं सदी के एक महान लेखक और चिंतक अलबेयर कामू का जन्म 7 नवंबर, 1913 को फ्रांस के तत्कालीन उपनिवेश अलजीरिया के मोनडोवी में हुआ। उनका बचपन गरीबी में बीता। 1923 में वह माध्यमिक स्कूल में दाखिल हुए और वहाँ से परीक्षाएँ पास करते हुए अल्जीयर्स विश्वविद्यालय में। विश्वविद्यालय की फुटबाल टीम के वह गोलकीपर थे और उन्होंने एक जगह लिखा भी है उन्हें नैतिकता की शिक्षा फुटबाल के खेल से मिली। 1930 में तपेदिक हो जाने पर उन्हें फुटबाल और विश्वविद्यालय की पढ़ाई छोड़नी पड़ी। इसके बाद का समय स्वाध्याय और प्राइवेट ट्यूटर, मोटर पार्ट कंपनी के किरानी और मौसम संस्थान का काम करते बीता। 1935 में उन्होंने बी.ए. और 1936 में एम.ए. पास किया। 1935 में उन्होंने मजदूरों के थिएटर की स्थापना की।

1935 में वह मार्क्सवादी-लेनिनवादी विचारधारा से आकृष्ट होने के बजाय स्पेन के गृहयुद्ध से ज्यादा चिंतित होकर फ्रांसीसी कम्युनिस्ट पार्टी में शामिल हुए। 1936 में अलजीरिया की आजादी की माँग करनेवाली अलजीरियाई कम्युनिस्ट पार्टी की स्थापना हुई लेकिन कामू अलजीरियाई पीपल्स पार्टी की गतिविधियों में भाग लेने लगे जिससे कम्युनिस्ट पार्टी के कामरेडों से उनकी असहमति बढ़ती गई और उन्हें ट्राटस्काइट करार देकर 1937 में कम्युनिस्ट पार्टी से निष्कासित कर दिया गया।

तपेदिक के कारण 1940 में उन्हें फ्रांसीसी सेना में भरती नहीं किया गया। 1941 में उन्होंने अपनी दो प्रसिद्ध पुस्तकें अजनबी (द स्ट्रेंजर) और मिथ आफ सिसिफस लिखी। द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान वह फ्रांसीसी प्रतिरोध (रेजिस्टेंस) संगठन 'कौम्बाट' में शामिल हुए और 1943 में संगठन के कौम्बाट नाम से ही प्रकाशित होनेवाले गुप्त पत्र के संपादक बने। मित्र राष्ट्रों की सेना ने जब पेरिस को मुक्त किया तो कामू ने लड़ाई के अंतिम दौर की खुद रिपोर्ट लिखी। जिन एकाध फ्रांसीसी संपादकों ने हिरोशिमा पर अणु बम फेंकने का विरोध किया, कामू उनमें एक थे। 1947 में उन्होंने 'कौम्बाट' से, जब वह व्यावसायिक पत्र बन गया, इस्तीफा दे दिया। इसी वक्त उनका प्रसिद्ध फ्रांसीसी चिंतक ज्यां

पाल सार्त्र से परिचय हुआ।

यद्यपि कामू का राजनैतिक रुझान वामपंथी रहा पर वह कम्युनिस्ट मतवाद की कड़ी आलोचना करते रहे और सार्त्र से उनकी दूरी बढ़ती गई। 1949 में उन्हें फिर से तपेदिक हो गया और वह दो वर्ष एकांतवास में रहे। 1951 में विद्रोह और क्रांति का दार्शनिक विश्लेषण और विवेचन करनेवाली उनकी प्रसिद्ध पुस्तक विद्रोही (द रेबेल) का प्रकाशन हुआ। इसमें कुम्युनिज्म को नकारने का उनका दृष्टिकोण इतना स्पष्ट था कि उनके बहुत से साथी उनसे खिन्न होते गए और सार्त्र से उनका पूरी तरह विलगाव हो गया। 1953 में पूर्वी बर्लिन की मजदूर हड़ताल, 1956 में पोलैंड के मजदूर-विद्रोह और हंगरी की क्रांति का कामू ने समर्थन किया और सोवियत रूस द्वारा उनके दमन की भर्त्सना।

1954 में अलजीरियाई युद्ध या मुक्ति संग्राम ने कामू के समक्ष धर्म संकट पैदा कर दिया। वह अलजीरिया को पूर्ण स्वतंत्रता प्रदान करने के बजाय अधिक स्वायत्तता प्रदान करने और यहाँ तक कि फ्रांस के साथ महासंघ (फेडरेशन) बनाने के पक्षधर होने को तैयार थे। वह मानते थे कि अरब लोग और अलजीरिया में बसाए गए गोरे फ्रांसीसी लोग एक साथ रह सकते हैं। स्टॉकहोम विश्वविद्यालय में अलजीरिया के प्रश्न पर अपनी निष्क्रियता के बचाव में उन्होंने कहा कि वह अपनी माँ के बारे में, जो अलजीरिया में रहती थीं, चिंतित थे कि उनके साथ क्या गुजरेगी। इस कथन से वामपंथी फ्रांसीसी बुद्धिजीवियों के बीच वह और ज्यादा तिरस्कृत हो गए। अलजीरियाई युद्ध या मुक्ति संग्राम के दौरान कामू ने एक ऐसे नागरिक युद्ध-विराम (सिविल ट्रूस) का प्रस्ताव रखा था जिसमें नागरिकों को अछूता रखने का सुझाव दिया गया था। इसको दोनों ही पक्षों ने मूर्खतापूर्ण करार देकर अस्वीकार कर दिया। अलजीरिया की फ्रांस से अलग होने की माँग का समर्थन न करने के बावजूद कामू छिपे तौर पर मृत्यु दंड प्राप्त करनेवाले अलजीरियाई बंदियों को बचाने की चेष्टा में लगे रहे।

यह एक दिलचस्प बात है कि 1957 में नोबेल कमेटी ने अधिकृत रूप से कामू को नोबेल पुरस्कार इसके पिछले साल प्रकाशित उनके उपन्यास 'पतन' (द फाल) पर न देकर मृत्युदंड के खिलाफ उनके लेखों की पुस्तक 'रिफलेक्शन्स सर ला गिलोटीन' पर दिया। उनसे कम उम्र में इसके पहले सिर्फ रुडयार्ड किपलिंग को ही नोबेल पुरस्कार प्राप्त हुआ था।

विचारों की दुनिया में कामू का महत्वपूर्ण योगदान उनका ऐबसर्ड (बेतुका, असंगत, निरर्थक) का विचार है। मिथ आफ सिसिफस, अजनबी (स्ट्रेंजर-आउटसाइडर) और प्लेग जैसे अपने उपन्यासों में उन्होंने अपने इस विचार को स्पष्ट किया है कि दुनिया और उसकी परिस्थितियाँ दोनों ही स्पष्टता और सार्थकता उपलब्ध नहीं करतीं। लेकिन वह निहिलिज्म (नकारवाद, 'कुछ भी नहीं वाद') के घनघोर विरोधी थे। उनके उपन्यास 'प्लेग' में डा० रिएडक्स, ओरान नगर के प्लेग पीड़ित नागरिकों की अनथक चिकित्सा और सेवा-सुश्रूषा करते हुए ऐबसर्ड और अन्यायपूर्ण दुनिया के प्रति विद्रोह करता है और कामू के कथन की पुष्टि करता है 'हम मानवजाति से निराश और हताश होने से इनकार करते हैं। लोगों को बचाने की नाहक महत्वाकांक्षा न रखते हुए भी हम तब भी उनकी सेवा करना चाहते हैं।' एक नैतिक व्यवस्था की संयमित तलाश, कामू के लेखन को उदात्तता और अपार गांभीर्य प्रदान करती है।

नोबेल पुरस्कार प्राप्त करने के तीन वर्ष बाद 47 वर्ष की आयु में 4 जनवरी, 1960 को एक कार दुर्घटना में कामू की मृत्यु हो गई।

सच्चिदानंद सिन्हा : जन्म : 1929; स्कूल में पढ़ते हुए ही 1942 में भारत छोड़ो आंदोलन में भाग लेने के दौरान जयप्रकाश नारायण के प्रभाव से समाजवादी आंदोलन से जुड़ गए। सोशलिस्टों के मजदूर आंदोलन के सिलसिले में मुंबई के गोदी (डॉक) मजदूरों के बीच खलासी का भी काम किया। पिछले पाँच दशकों से मजदूर व किसान आंदोलनों और सक्रिय राजनीति में भागीदारी के साथ निरंतर लेखन कार्य। राजनैतिक और आर्थिक विषयों के साथ-साथ कला, संस्कृति, समाजशास्त्र, नृतत्वशास्त्र (एंथ्रोपोलॉजी) और एथोलॉजी (पशुओं के व्यवहार-आचरण संबंधी अध्ययन) पर लिखते रहे हैं। अभी बिहार के मुजफ्फरपुर जिले के मनिका गाँव में निवास।

प्रकाशित पुस्तकें

अंग्रेजी में : द इंटरनल कॉलोनी, सोशलिज्म एंड पावर, दि बिटर हारवेस्ट, इमरजेंसी इन पर्सपेक्टिव, द परमानेन्ट क्राइसिस ऑफ इंडिया, केऑस एंड क्रियेशन, एडवेंचर्स ऑफ लिबर्टी, कोलिशन इन पॉलिटिक्स, दि अनआर्म्ड प्रोफेट, सोशलिज्म : ए मैनीफेस्टो फॉर सरवाइवल, द कास्ट सिस्टम : मिथ्स, रियलीटी, चैलेंज।

हिंदी में : समाजवाद के बढ़ते हुए चरण, जिंदगी सभ्यता के हाशिए पर, भारतीय राष्ट्रीयता और सांप्रदायिकता, उपभोक्तावाद : गुलाम मानसिकता की अफीम, भारत में तानाशाही, मानव सभ्यता और राष्ट्र-राज्य, संस्कृति और समाजवाद, भूमंडलीकरण की चुनौतियाँ, संस्कृति विमर्श, पूँजीवाद का पतझड़, नक्सली आंदोलन का वैचारिक संकट, बच्चो इनसे सीखो तुम (बच्चों के लिए कविताएँ)।

संपर्क : गाँव व पोस्ट : मनिका, जिला : मुजफ्फरपुर, पिन : 843119

भूमिका

उन्नीसवीं शताब्दी के आखिरी वर्षों से लेकर बीसवीं शताब्दी के पूर्वार्ध तक में यूरोपीय समाज में सभी नैतिक बंधनों को नकारने का रुझान 'निहिलिज्म' और 'अस्तित्ववाद' के दर्शन के रूप में काफी प्रबल था। दोस्तवस्की की यह शंका 'अगर ईश्वर नहीं है तो सब कुछ करना क्षम्य है' और नीत्से की घोषणा 'ईश्वर मर चुका है और आदमी को उसके खाली सिंहासन पर आसीन होकर अराजक हो चुके संसार को नए नियमों में बाँधना है', इनमें सभी पूर्ववर्ती समाजों से भिन्न, दुनिया को देखने का एक नया नजरिया प्रस्तुत होता था। हकीकत की दुनिया में इसके पूरक पक्ष के रूप में दुनिया को नए सिरे से गढ़ने का क्रांतिकारी रुझान भी भिन्न-भिन्न रूपों में आया, हालाँकि उनके घोषित लक्ष्यों और भावनाओं में भिन्नता दिखती थीं। रूस में जारशाही की अधिनायकवादी व्यवस्था के विरुद्ध एक आंदोलन सोशलिस्ट रिवोल्युशनरी पार्टी का था। लेनिन के बड़े भाई अलेग्जैंडर इसी पार्टी से जुड़े थे। जार की हत्या करने का षड्यंत्र करने के आरोप पर उन्हें फाँसी दी गई थी। इस पार्टी की क्रांतिकारी आतंकवादी कार्रवाइयाँ – यानी उच्च स्थानों पर आसीन जार के पदाधिकारियों और स्वयं जार की हत्या से शासनतंत्र को इतना आतंकित करना चाहती थीं कि व्यवस्था ध्वस्त हो जाय और जनता का शोषणविहीन राज्य कायम हो जाय। क्रांतिकारियों की मूल चेतना समाज में 'न्याय' स्थापित करने की थी।

लेकिन यहीं एक शंका और विवाद का जन्म होता है। क्या ऐसी आतंकवादी कार्रवाइयों के दौरान ऐसी अनचाही घटनाएँ क्षम्य हैं जिनमें निर्दोष लोग मारे जाएँ? इस नाटक में कालियायेव, स्तेपान, दोरा आदि पात्रों के माध्यम से इस विवाद का हल ढूँढ़ने की कोशिश की गई है। सर्वशक्तिमान ईश्वर संसार में अपनी व्यवस्था कायम करने के क्रम में बेहिचक विशाल पैमाने पर पूर्ववर्ती निर्मितियों का ध्वंस और जीवों का संहार करता चलता है। क्या न्याय का आग्रही मनुष्य भी ईश्वर की तरह ऐसी निर्ममता कबूल कर सकता है? अगर हम ईश भक्तों की बात मानें तो ईश्वर सर्वज्ञ और सर्वशक्तिमान है, और विध्वंस से जो नया निर्माण होगा उसके बारे में जानता है और आश्वस्त है। लेकिन क्रांतिधर्मा मनुष्य जो नहीं जानता कि उसके कामों का अंतिम अंजाम क्या होगा, क्या इस तरह हत्या और विध्वंस के लिए स्वतंत्र है?

यह महज कोई काल्पनिक प्रश्न नहीं है। आज जो आतंकवादी हिंसा हो रही है–

चाहे जिहाद के लिए हो, माओवादियों द्वारा नया समाज बनाने के लिए हो, या राष्ट्रीय या क्षेत्रीय स्वायत्तता के लिए संघर्ष करनेवालों के द्वारा हो – सभी में बड़े पैमाने पर निर्दोष व्यक्तियों की चाहे-अनचाहे हत्याएँ हो रही हैं। इतना ही नहीं, स्थापित व्यवस्थाओं के द्वारा भी चिन्हित दोषी लोगों को ही न्यायिक प्रक्रिया से दंड नहीं दिया जाता बल्कि पुलिस या फौजी कार्रवाइयों के दौरान अनेक ऐसे लोगों की मृत्यु होती है, जिन्हें व्यवस्था ने अपने ही कानूनों की दृष्टि से दोषी साबित नहीं किया होता है। अमेरिकी राष्ट्रपति जॉर्ज डब्ल्यू बुश ने तो बड़े पैमाने पर हजारों की संख्या में मारे जानेवाले ऐसे लोगों की मृत्यु और विध्वंस का औचित्य ठहराते हुए एक पद, कोलैटेरल डैमेज (आनुषंगिक नुकसान) का आविष्कार किया है। आतंकवादी या क्रांतिकारी हिंसा में भी 'आनुषंगिक नुकसान' का एक पहलू रहता है।

लेकिन यह सब मात्र संघर्ष की गहमागहमी में होनेवाली मौतों का मामला नहीं है। कामू के सामने क्रांति के गर्भ से पैदा सोवियत समाज का नक्शा भी था जो एक तरह की शोषण व्यवस्था की जगह एक दूसरी और अधिक भीषण तानाशाही व्यवस्था बन गई। यहाँ कुछ भी अप्रत्याशित नहीं था, सब कुछ पूर्व नियोजित था – न्याय की कामना से अपनाई गई अमर्यादित हिंसा का परिणाम। इन अनुभवों से न्याय के लिए हिंसा का मार्ग अपनानेवाले न्यायी का संकल्प संशयग्रस्त हो जाता है, अगर वह एक तरह की जालिम व्यवस्था के विकल्प में बनी दूसरी अन्यायी व्यवस्था को स्वीकार नहीं करता। जो लोग अपनी अविछिन्न सत्ता कायम कर लेने भर से संतुष्ट हो जाते हैं उन लोगों के भीतर यह अंतरद्वंद्व पैदा नहीं होता। लेकिन तब न्याय का अर्थ बदल जाता है, अन्याय के विरुद्ध प्रति-अन्याय एक नियति की तरह स्वीकार कर लिया जाता है।

नाटक का केंद्रीय नायक कालियायेव काल्पनिक नहीं एक वास्तविक चरित्र है, जो 1905 में जार के एक अधिकारी ग्रैंड ड्यूक सरजई की हत्या करता है और फिर फाँसी पर चढ़ता है। वह ऊपर वर्णित द्वंद्व से निजात इस निर्णय से पाता है कि अगर हत्या के बदले स्वेच्छा से मौत स्वीकार की जाए तो हत्यारा होने के भाव से मुक्ति मिल सकती है। यह इस हिला देनेवाले अंतरद्वंद्व से बचने का एक मार्ग हो सकता है। कामू ने उसी के चरित्र के माध्यम से इस बात की सीमा का निर्धारण किया है कि क्रांतिकारी कहाँ तक जा सकता है। हम क्या कर सकते हैं, इसकी सीमा निर्धारित करने के विचार के कारण कामू का मतभेद ज्यॉ पाल सार्त्र से होता है जो उसका समकालीन था और अस्तित्ववादी दर्शन का मुख्य प्रवक्ता था। सार्त्र किसी ऐसी सीमा को मनुष्य के नैतिक निर्णय की स्वतंत्रता पर बंधन मानता था। उसके अनुसार मनुष्य अपने कर्मों की जवाबदेही स्वीकार कर स्वयं एक नैतिकता का निर्माण करता है और इसके लिए वह स्वतंत्र है। कोई अचरज नहीं कि सोवियत व्यवस्था की हकीकत को जानते हुए भी सार्त्र कम्युनिस्ट पार्टी

का सदस्य था। लेकिन इस विचार से स्वनिर्मित कसौटी के आधार पर आत्मतुष्टि का मार्ग तो खुलता है लेकिन न्याय का रास्ता क्या हो, यह नहीं दिखाई देता।

कामू के सामने सदा एक बुनियादी अंतरद्वंद्व उपस्थित था जो कई दूसरे अस्तित्ववादियों के सामने भी था। उसके अंतर्द्वंद्व का उत्स था -- मानव अस्तित्व को एक 'एबसर्ड' (निरर्थकता) के रूप में देखना। कामू ने अपने एक लेख 'निरर्थकता और आत्महत्या' को इस रूप में पेश किया है कि आदमी संसार में क्यों है, इसका कोई तुक नहीं। इसलिए जीवन की अर्थहीन उलझनों से निकलने का रास्ता आत्महत्या में दिखाई देता है। संसार के अर्थहीन अस्तित्व से मुक्ति के लिए आत्महत्या और सामाजिक अन्याय से दुनिया को मुक्त करने के लिए हत्या, दोनों ही स्थितियों में मानव अस्तित्व में निहित किसी अटल त्रासदी का अहसास है। दूसरी स्थिति में समस्या के किसी हल के अभाव में हत्या की क्षतिपूर्ति आत्मबलिदान से होती है जो एक अर्थ में आत्महत्या ही है।

लेकिन गंभीरता से विचार करने पर अस्तित्ववादियों की एबसर्ड की कल्पना काल-विशेष में व्याप्त एक तरह का भावनात्मक रुझान भर व्यक्त करती है, कोई दार्शनिक और तार्किक दृष्टि नहीं। अधिक बुद्धिसंगत दृष्टि होगी – मानव जीवन को एक चमत्कार के रूप में देखना। असंख्य अणुओं एवं परमाणुओं के खिंचाव, विकर्षण संघात और संश्लेषण की सतत होनेवाली प्रक्रियाओं से संवेदनशील चेतना और जीवन का विकास मनुष्य के लिए अचरज और आनंद का स्रोत है। इसके पीछे किसी अर्थ की तलाश बेकार है और अखिल ब्रह्मांड में तिनके से भी छोटी हैसियत रखनेवाले मनुष्य की बौद्धिक सीमा से परे भी। लेकिन जीवन जो सीमित संभावनाएँ मनुष्य के सामने प्रस्तुत करता है उन्हें ही वह मानवीय आनंद का स्रोत बना सकता है। बिना किसी दार्शनिक पचड़े में पड़े अपने विकास के क्रम में छोटे-छोटे दायरों में मनुष्य यही करता रहा है। लेकिन विकास-क्रम में ऐसी स्थितियाँ पैदा हुई कि आदमी प्रेम, सहयोग, नृत्य, संगीत, कला, साहित्य आदि में ऐसे आनंद की तलाश की जगह अपरिमेय आर्थिक और राजनीतिक शक्ति समेट दूसरे मनुष्यों और सारी प्रकृति पर वर्चस्व स्थापित करने की धुन में पागल हो दूसरे मनुष्यों के लिए उत्पीड़न का कारण बन गया। फिर इसके खिलाफ विद्रोह और न्यायपूर्ण समाज बनाने की प्रक्रिया शुरू हुई। हिंसक क्रांतियाँ इसी का परिणाम रही हैं। लेकिन वे स्वयं मनुष्य को एक अंतरद्वंद्व में डालती रही हैं क्योंकि उनकी परिणति नए तरह के उत्पीड़न के रूप में आई। कामू के इस नाटक में इसी उलझन के एक रूप से मुक्ति की तलाश है। लेकिन अंततः यह एक त्रासदी ही साबित होती है।

यह ध्यान में रखने की बात है कि बीसवीं शताब्दी के प्रारंभिक वर्षों में रूस में ही टाल्सटाय ने उत्पीड़न से लड़ने के लिए प्रेम की शक्ति जागृत करने की कल्पना की थी।

लेकिन उन्हें कोई रास्ता दिखाई नहीं दे रहा था। 1907 में जब महात्मा गांधी ने दक्षिण अफ्रिका में सत्याग्रह के अहिंसक मार्ग का सफल प्रयोग किया तो टाल्सटाय काफी उत्साहित हुए थे और उन्होंने अपनी मृत्यु के पूर्व एक पत्र भी महात्मा गांधी को लिखा था। इसी के आसपास ब्रिटेन में महिलाओं ने मतदान के अधिकार के लिए अहिंसक संघर्ष किया था। आश्चर्य है कि कामू के सामने ये उदाहरण नहीं थे, जो हत्या और फिर आत्मबलिदान के जरिए कीमत चुकाने के बजाय अहिंसक प्रतिरोध के माध्यम से इस गतिरोध से मुक्ति दिला सकें। दूसरी ओर महात्मा गांधी के शिष्यों में गांधी के आगे बढ़ व्यवस्थाजनित हत्या और उसके विविध आयामों के संदर्भ में क्या किया जा सकता है, इस पर कोई गंभीर विचार मंथन नहीं हुआ है। शायद व्यक्ति के स्तर पर वे इसकी विविध भावनाओं के अंतरद्वंद्व से अपरिचित हैं। इस नाटक से उन्हें भी उत्तेजना मिल सकती है। इसके अभाव में फिलहाल एक तरह का गतिरोध है।

अनुवाद के बारे में दो शब्द

इस अनुवाद के बारे में दो शब्द लिखना जरूरा है। अनुवादक का फ्रांसीसी भाषा का ज्ञान इतना भर है कि वह पढ़ कर किसी तरह मोटा-मोटी अर्थ समझ सकता है। अपनी भाषा हिंदी का भी उसका ज्ञान अति साधारण है। लेकिन इस नाटक की प्रासंगिकता पिछले सौ साल के इतिहास और हमारे चारों ओर हो रही घटनाओं के संदर्भ में इतनी अधिक है कि इसके भाव और अर्थ भाषाई सीमाओं को लाँघ हमारे पास पहुँचते हैं। इसी दबाव में यह अनुवाद संभव हुआ। वैसे तो सभी कलाओं की संप्रेषणीयता काफी हद तक दर्शक या पाठक की अपनी पृष्ठभूमि और खासकर उसकी कल्पना पर निर्भर करती है, जो संप्रेषण की रिक्तता को भर अर्थ को पूर्णता प्रदान करती है। इस अनुवाद के साथ कुछ वैसा ही हुआ है। शायद अनुवादक की सीमाओं से पैदा कमी को उपयुक्त मंचन से पूरा किया जा सके, यह अनुवादक की आशा है।

— सच्चिदानंद सिन्हा

न्यायी हत्यारे : एक परिचय

'न्यायी हत्यारे' अलबेयर कामू के 1949 में फ्रेंच में लिखे नाटक 'लेस जस्टेस' का हिंदी अनुवाद है। लेस जस्टेस का शाब्दिक अनुवाद सिर्फ न्यायी होगा। यह नाटक हत्या और आतंक के साथ जुड़े नैतिक प्रश्नों को बड़ी मार्मिकता के साथ उपस्थित करता है।

कामू के इस नाटक में स्तेपान फेदोरोव को छोड़ कर सभी पात्र 1905 में ग्रैंड ड्यूक सरजई रोमानोव की हत्या करनेवाले रूसी सोशलिस्ट क्रांतिकारी ग्रुप के सदस्यों के वास्तविक चरित्रों पर आधारित है। अपनी भूमिका में कामू ने लिखा है कि कालियायेव तो एक क्रांतिकारी का असली नाम है। स्तेपान के चरित्र की सृष्टि कामू ने कम्युनिस्ट पार्टी से अपने मतभेदों को उजागर करने के लिए की है। नाटक में पाँच दृश्य (या अंक) हैं। प्रथम तीन और अंतिम पाँचवे दृश्य का स्थान क्रांतिकारियों का ठिकाना है, चौथे दृश्य का स्थान जेल है।

पहले दृश्य में क्रांतिकारी बम फेंक कर ग्रैंड ड्यूक की हत्या करने की एक सांगोपांग योजना बनाते हैं और कालियायेव (यानेक) को बम फेंकने के लिए चुना जाता है।

दूसरे दृश्य में यानेक बम फेंक न पाने के बाद लौट आता है क्योंकि उस वक्त ग्रैंड ड्यूक की बग्घी में दो बच्चे भी सवार रहते हैं। स्तेपान इस पर क्षोभ प्रकट करता है लेकिन अन्य साथी यानेक का पक्ष लेते हैं।

तीसरे दृश्य में यानेक दूसरी बार बम फेंकने की तैयारी करता है; अलेक्सिस वोइनोव हिंसक कार्रवाइयों में भाग ले पाने में अपनी असमर्थता पर लज्जित हो पार्टी के प्रचार विभाग में शामिल होने का निर्णय करता है।

चौथे दृश्य में स्थान जेल है, जहाँ यानेक बम फेंकने के बाद कैद है। खुफिया विभाग का अधिकारी स्कूरातोव यानेक से मिलता है और उसे अपराध कबूलने और अपने साथियों का नाम-पता देने के लिए यह कह कर धमकाता है कि यदि उसने इनकार किया तो वह (स्कूरातोव) यह समाचार प्रकाशित करवा देगा कि ग्रैंड ड्यूक की पत्नी से कालियायेव ने अपने किए पर पश्चाताप प्रकट किया है और इसका नतीजा यह होगा कि उसके साथी यह विश्वास कर लेंगे कि उसने (कालियायेव) उन्हें धोखा दिया है। इस धमकी के पहले ग्रैंड ड्यूक की पत्नी ग्रैंड डचेस कालियायेव की कोठरी में प्रवेश करती है और ग्रैंड ड्यूक की हत्या करने के अपराध के मानव-हत्यावाले पक्ष को उसे दरशाती है और कहती है कि मृत्यु से बचने के लिए वह क्रांतिकारी होने के

बजाय हत्यारा होना मंजूर कर ले। कालियायेव ग्रैंड डचेस के अपने पति के संस्मरणों से द्रवित तो होता है लेकिन उसकी बात मानने से दृढ़ता के साथ इनकार करता है।

पाँचवे और अंतिम दृश्य में स्थान क्रांतिकारियों का वही ठिकाना है। कालियायेव को फाँसी पर चढ़ाए जानेवाली रात है। अन्नेकोव, दोरा और स्तेपान कालियायेव का समाचार जानने की प्रतीक्षा कर रहे हैं। वोइनोव भी समाचार जानने की व्यग्रता में चला आता है। एक-दो साथी यह शक जाहिर करते हैं कि शायद कालियायेव ने अपनी जान बचाने के लिए भेद खोल दिया है। लेकिन दोरा यह जानती है कि ऐसा नहीं हो सकता। थोड़ी देर बाद कालियायेव को फाँसी पर चढ़ाए जाने का समाचार मिलता है। दोरा, स्तेपान जैसा रुख अख्तियार करती है और कालियायेव की फाँसी का बदला लेने के लिए अकेले जारशाही से लड़ने की प्रतिज्ञा करती है।

पात्र

इयान (यानेक) कालियायेव : नाटक का मुख्य चरित्र है। ग्रैंड ड्यूक की हत्या करने के लिए वह बम फेंकता है। उसे साथी कवि भी कहते हैं। अन्य क्रांतिकारियों की तरह उसने जारशाही के खिलाफ लड़ने के लिए भौतिक सुखों का त्याग किया है; वह अपनी क्रांतिकारिता के बावजूद जीवन के प्रति उत्कट प्रेम की बात बार-बार कहता है – वह दुनिया को बेहतर बनाना चाहता है। स्तेपान फेदोरोव से उसका अक्सर विवाद होता है। वह दोरा दुलेबोव का प्रेमी रह चुका है। कम्युनिस्ट होने के कारण वह नास्तिक है लेकिन उसे क्रास का चिन्ह बनाने जैसा धार्मिक आचार करते हुए देखा जाता है। किसी भी मनुष्य की हत्या का विचार उसे परेशान करता है। ग्रैंड ड्यूक की हत्या करने के 'अपराध' की वह 'माफी' फाँसी पर चढ़ने में ढूँढ़ता है-- आत्म-बलिदान मानव हत्या के 'अपराध' का प्रतिदान है। इयान कालियायेव एक क्रांतिकारी का वास्तविक नाम है।
स्तेपान फ़ेदरोव : नाटक का एकमात्र काल्पनिक चरित्र है। वह तीन वर्ष जेल में रहने के बाद स्विट्जरलैंड भाग जाता है (लेनिन का संदर्भ यहाँ प्रकट है)। जेल का अनुभव उसे बहुत कटु बना डालता है और वह जीवन की सुंदरता को देखना नहीं चाहता — 'आजादी भी तब तक एक कैद है जब तक कि दुनिया में एक भी आदमी गुलाम है'। वह अक्सर अंधाधुंध विनाश की बहकी-बहकी बातें करता रहता है — 'कितने बमों से मास्को को नेस्तनाबूद किया जा सकता है?' वह अपने साथियों से बार-बार बम फेंकने की इजाजत माँगता पर साथी उसे असंतुलित और अस्थिर मान नहीं देते।
दोरा दुलेबोव : कालियायेव की प्रेमिका रह चुकी है। रसायन-शास्त्र की जानकार होने के कारण बम बनाने का जिम्मा उसका है। वह पार्टी में शामिल होने से पहले के जीवन को बड़े चाव से याद करती है। सौम्य और कोमल स्वभाव की होने के बावजूद

कालियायेव की मृत्यु का प्रतिशोध लेने के लिए वह स्तेपान जैसा आक्रामक रुख अपनाती है और जारशाही के खिलाफ अकेले लड़ने और मृत्यु वरण करने का संकल्प करती है।
बोरिस अन्नेकोव : पार्टी का नेता है। कौन बम फेंकेगा कौन नहीं आदि, हत्या के बारे में सारे निर्णय करता है। स्तेपान और कालियायेव के बीच विचारों में मध्यस्थता करने की भूमिक अदा करता है। आम तौर पर साथियों की उत्तेजना को संयत करने की कोशिश करता है।
अलेक्सिस वोइनोव : जार के विरुद्ध बोलने के कारण विश्वविद्यालय से निष्कासित कर दिया गया है। जारशाही के खिलाफ लड़ना आवश्यक मानता है। ग्रैंड ड्यूक की हत्या करने की कार्रवाई में शामिल था पर वह अपना बम फेंक नहीं सका तो उसने महसूस किया कि वह सीधी हिंसक कार्रवाई में भाग लेने के अनुपयुक्त है। इस कारण वह लज्जित है और यह तय करता है कि ऐसी कार्रवाई में भाग लेने के बजाय वह पार्टी के प्रचार विभाग में काम करेगा — यद्यपि जोखिम वहाँ भी रहेगी पर उसे हिंसा तो नहीं देखनी पड़ेगी।

नाटक के अन्य पात्र हैं — ग्रैंड ड्यूक सर्ज की विधवा पत्नी **ग्रैंड डचेस**। वह कालियायेव से जेल में मिलती है और ग्रैंड ड्यूक की छोटी-छोटी आदतों और अच्छाइयों के बारे में उसे बताती है। वह कालियायेव से कहती है कि वह क्रांतिकारी होने के बजाय हत्यारा होना स्वीकार कर ले ताकि उसे माफी मिल सके। वह उसे ईसाई धर्म स्वीकार करने को भी कहती है। **स्कूरातोव** खुफिया पुलिस का अधिकारी है। वह कालियायेव से जेल में मिलता है और उसे धमकाता है। **फोका** नशे में हत्या करने के अपराध में कैदी है। जेल में कालियायोव से मिलता है। उसे बीस वर्ष की कैद मिली है। उसे जल्लाद का काम मिला है। प्रत्येक फाँसी पर उसकी सजा एक वर्ष कम होती जाती है। **प्रहरी** नाटक का नाम मात्र का पात्र; वह कालियायेव और फोका को चुप रहने को कहता है।

पात्र

दोरा दुलेबोव

ग्रैंड डचेस

इवान कालियायेव (यानेक)

स्तेपान फेदोरोव

बोरिस अन्नेकोव (बोरिया)

अलेक्सिस वोइनोव (अलेक्सी)

स्कूरातोव

फोका

प्रहरी

कैसा प्रेम! कैसा जीना! होने में नहीं, अंत में होना

O love! O life! Not life but love in death

(Romeo Et Juilette Act IV, Scene 5)

दृश्य : एक

(आतंकवादियों का ठिकाना)

समय : प्रातःकाल

(बिना आवाज के परदा उठता है; दोरा और अन्नेकोव रंगमंच पर निश्चल दिखाई देते हैं; एक बार दरवाजे की घंटी सुनाई पड़ती है; दोरा कुछ कहना चाहती है, मगर अन्नेकोव इशारे से उसे चुप रहने को कहता है;घंटी एक के बाद एक,दो बार बजती है)

अन्नेकोव : वही है। *(वह उठता है; दोरा इंतजार करती है; अन्नेकोव दरवाजा खोल कर स्तेपान के साथ उसके कंधे पर हाथ डाले वापस आता है)*

अन्नेकोव : यही है, अपना स्तेपान।

दोरा : *(स्तेपान की तरफ बढ़ कर उसका हाथ थामती है)* मिल कर कितनी खुशी हुई!

स्तेपान : गुड मॉर्निंग दोरा।

दोरा : *(उसे निहारती है)* तीन साल बीत गए न!

स्तेपान : हाँ, तीन साल! उस समय से जब उन्होंने मुझे गिरफ्तार किया था। मैं फिर तुम लोगों के बीच वापस आ गया हूँ।

दोरा : हम सभी तुम्हारा इंतजार करते रहे। समय बीतता रहा और मेरा दिल बैठने लगा था। हम लोग पुनः अपने को देखने का साहस नहीं कर सकते थे।

अन्नेकोव : हमें अपने स्थान को पुनः एक बार बदलना जरूरी हो गया।

स्तेपान : मुझे मालूम है।

दोरा : और वहाँ क्या गुजरा, स्तेपान?

स्तेपान : वहाँ?

दोरा : कारावास में?

स्तेपान : वहाँ से निकल भागा।

अन्नेकोव : हाँ। तुम स्विट्जरलैंड निकल भागे, जान हमें राहत महसूस हुई।

स्तेपान : बोरिया, स्विट्जरलैंड एक दूसरा कारागार है।

अन्नेकोव : क्या कहते हो? कम से कम वहाँ आजादी तो है, लोग आजाद हैं।

स्तेपान : आजादी भी एक कारावास ही है जब तक धरती पर कोई भी व्यक्ति गुलाम है। मैं आजाद था लेकिन कोई भी पल नहीं बीता जब मैं रूस और उसके गुलामों की चिंता से मुक्त रहा।

(चुप्पी)

अन्नेकोव : स्तेपान, मैं खुश हूँ कि पार्टी ने तुम्हें यहाँ भेज दिया।

स्तेपान : उन्हें यह करना ही था। चिंताओं से दिन-रात मेरा दम घुट रहा था। *(अन्नेकोव पर निगाह डालता है)* हम उसे मार डालेंगे, है न?

अन्नेकोव : निश्चित!

स्तेपान : हम उस जल्लाद को मार डालेंगे। तुम प्रधान हो बोरिया और मैं तुम्हारा आदेश मानूँगा।

अन्नेकोव : स्तेपान, मुझे तुम्हारे वादे की जरूरत नहीं, हम सभी साथी हैं।

स्तेपान : अनुशासन तो चाहिए ही। कारावास में मुझे यह अहसास हुआ। सोशलिस्ट रिवोल्युशनरी पार्टी को अनुशासन की जरूरत है। अनुशासित हो हम ग्रैंड ड्यूक का वध करेंगे और अत्याचारी शासन का खात्मा।

(दोरा उनके पास आते हुए)

दोरा : बैठो स्तेपान, इस लंबी यात्रा में तुम बहुत ही थके होगे।

स्तेपान : मैं कभी भी थका नहीं!

(चुप्पी; दोरा बैठ जाती है)

स्तेपान : सारी तैयारी हो चुकी है, बोरिया?

अन्नेकोव : (स्वर बदलते हुए) एक महीने से हममें से दो साथियों ने ग्रैंड ड्यूक की गतिविधियों का अध्ययन किया है। दोरा ने आवश्यक सामग्री इकट्ठा कर ली है।

स्तेपान : क्या घोषणा का मजमून तैयार है?

अन्नेकोव : हाँ, सारा रूस जान लेगा कि ग्रैंड ड्यूक सर्जे को सोशलिस्ट रिवोल्युशनरी पार्टी के जंगी दस्ते ने बम से उड़ा कर मृत्युदंड दे दिया है ताकि रूसी जनता को जल्द आजाद किया जा सके। रूसी राजतंत्र को भी यह अहसास हो जाएगा कि हम लोगों ने तब तक आतंक जारी रखने का फैसला किया है जब तक धरती पर जनता का राज्य कायम नहीं हो जाता। हाँ स्तेपान, हाँ सब कुछ तैयार है। वक्त नजदीक आ गया है।

स्तेपान : मुझे क्या करना है?

अन्नेकोव : तत्काल तुम दोरा की मदद करोगे। स्वाइत्जेर की जगह तुम्हें लेना है, वह दोरा के साथ काम करता था।

स्तेपान : क्या उसकी मृत्यु हो गई?

अन्नेकोव : हाँ।

स्तेपान : कैसे?

दोरा : एक दुर्घटना।

(स्तेपान दोरा की ओर देखता है; दोरा नजर फेर लेती है)

स्तेपान : इसके बाद?

अन्नेकोव : इसके बाद देखा जाएगा। अगर नौबत आ गई तो तुम्हें हमारी जगह लेने के लिए तैयार रहना चाहिए और केंद्रीय समिति से संपर्क बनाए रखना चाहिए।

स्तेपान : हमारे साथी कौन हैं?

अन्नेकोव : तुम वोइनोव से स्विट्जरलैंड में मिल चुके हो। उसकी कच्ची उम्र के बावजूद मुझे उस पर भरोसा है। यानेक तुम्हारे लिए अपरिचित है।

स्तेपान : यानेक?

अन्नेकोव : कालियायेव। हम लोग उसे कवि भी कहते हैं।

स्तेपान : आतंकवादी के लिए यह नाम जँचता नहीं।

अन्नेकोव : *(हँसते हुए)* यानेक इसके बिलकुल विपरीत कवित्व को क्रांतिकारी मानता है।

स्तेपान : सिर्फ बम ही क्रांतिकारी है। *(चुप्पी)* दोरा, क्या तुम्हें भरोसा है कि मैं तुम्हारी मदद कर सकता हूँ।

दोरा : हाँ, सिर्फ ध्यान रखना कि नली न टूटे।

स्तेपान : अगर वह टूट गई तो?

दोरा : स्वाइत्जर की मौत इसी से हुई *(कुछ रुक कर)* हँसते क्यों हो स्तेपान?

स्तेपान : मैं, हँस रहा हूँ?

दोरा : हाँ।

स्तेपान : कभी-कभी अचानक मुझे हँसी आ जाती है। *(कुछ सोचते हुए)* क्या एक बम इस मकान को उड़ा देगा?

दोरा : सिर्फ एक, नहीं। लेकिन वह क्षतिग्रस्त जरूर कर देगा।

स्तेपान : मास्को को उड़ा देने के लिए कितने बमों की जरूरत होगी?

अन्नेकोव : तुम पागल हो! तुम करना क्या चाहते हो?

स्तेपान : कुछ नहीं।

(दरवाजे की घंटी एक बार बजती है; वे सुनते हैं और इंतजार करते हैं; घंटी दुबारा बजती है; अन्नेकोव देहरी की तरफ जाता है और वोइनोव के साथ आता है)

वोइनोव : स्तेपान!

स्तेपान : गुड मॉर्निंग।

(वे हाथ मिलाते हैं; वोइनोव दोरा की ओर बढ़ता है और वे गले मिलते हैं)

अन्नेकोव : सब कुछ ठीक रहा अलेक्सी?

वोइनोव : हाँ।

अन्नेकोव : क्या तुमने महल से थियेटर तक के सारे रास्ते की ठीक-ठीक पड़ताल कर ली है?

वोइनोव : मैं अभी उसका खाका तैयार कर सकता हूँ। देखो, *(वह खाका खींचता है)* बग्घी, बाधाएँ, मकानात... गाड़ी हमारी खिड़की के नीचे से गुजरेगी।

अन्नेकोव : इन दो क्रॉसों का क्या अर्थ है?

वोइनोव : वह छोटी सी जगह, जहाँ घोड़े धीमे होंगे और थियेटर जहाँ वे रुकेंगे। मेरे ख्याल से यह सबसे ठीक जगह होगी।

अन्नेकोव : बिलकुल ठीक।

स्तेपान : जासूस?

वोइनोव : *(हिचक के साथ)* उनकी भरमार है।

स्तेपान : क्या तुम्हें उनसे घबड़ाहट होती है?

वोइनोव : मैं बहुत सहज नहीं महसूस करता।

अन्नेकोव : उनके बीच कोई भी सहज महसूस नहीं करता। इससे परेशान होने की जरूरत नहीं।

वोइनोव : मुझे कोई डर नहीं है। मुझे झूठ बोलने की आदत नहीं। बस!

स्तेपान : सारी दुनिया झूठ बोलती है। बस,सफलता से झूठ बोलने की जरूरत है।

वोइनोव : यह आसान नहीं है। जब मैं विद्यार्थी था तब मेरे सहपाठी इस बात के लिए मेरा मजाक उड़ाते थे कि मैं छल नहीं कर सकता था। मैं वही बोलता था जो सोचता था। अंत में मुझे विश्वविद्यालय से निष्कासित कर दिया गया।

स्तेपान : क्यों?

वोइनोव : इतिहास के क्लास में प्राध्यापक ने मुझसे पूछा कि पीटर महान ने सेंट पीट्सबर्ग को कैसे स्थापित किया?

स्तेपान : बढ़िया प्रश्न!

वोइनोव : चाबुक और खून से, मैंने जवाब दिया और मुझे निष्कासित कर दिया गया।

स्तेपान : फिर...

वोइनोव : मैंने समझ लिया कि अन्याय के खिलाफ बोलना ही काफी नहीं है। उससे संघर्ष के लिए जीवन देना जरूरी है। अब मैं संतुष्ट हूँ।

स्तेपान : फिर भी तुम झूठ बोलते हो?

वोइनोव : मैं झूठ बोलता हूँ लेकिन मैं उस दिन के बाद झूठ नहीं बोलूँगा जब बम फेंक चुकूँगा।

(एक घंटी; दो दस्तक फिर एक दस्तक; दोरा उछल पड़ती है)

अन्नेकोव : यह यानेक है।

स्तेपान : यह परिचित संकेत नहीं है।

अन्नेकोव : यानेक को संकेत बदलने में मजा आता है। वह उसका निजी संकेत है।

(स्तेपान कंधे उचकाता है; देहरी में दोरा की आवाज सुनाई पड़ती है; दोरा और कालियायेव अंदर आते हैं, हाथ में हाथ डाले; कालियायेव हँसता है)

दोरा : यानेक। स्तेपान से मिलो, यह स्वाइत्जर का स्थान लेगा।

कालियायेव : स्वागत है मित्र।

स्तेपान : धन्यवाद।

(दोरा और कालियायेव आमने-सामने बैठते हैं)

अन्नेकोव : यानेक क्या तुम बग्घी को निश्चित रूप से पहचान लोगे?

कालियायेव : हाँ, मैंने उसे दो बार ध्यान से देखा है। जैसे ही उसका अक्स उभरेगा मैं उसे हजारों के बीच पहचान लूँगा। मैंने सभी चीजों को तफसील से देखा है। उदाहरण के लिए बग्घी की बाईं लालटेन का शीशा टूटा हुआ है।

वोइनोव : और जासूस?

कालियायेव : झुंड के झुंड। लेकिन हम लोग खासे दोस्त बन गए हैं। वे मुझे सिगरेट पिलाते हैं। *(हँसता है)*

अन्नेकोव : पावेल ने सूचनाओं की तसदीक कर दी है?

कालियायेव : ग्रैंड ड्यूक इस सप्ताह थियेटर आएगा। कुछ ही पल में पावेल को ठीक-ठीक दिन का पता चल जाएगा और वह दरवान को खबर कर देगा। *(वह दोरा की तरफ देखता है और हँसता है)* हमें मौका मिलेगा, दोरा।

दोरा : *(उसे देखते हुए)* फिलहाल तुम खोमचेवाले नहीं लगते। तुम खासे रईस लगते हो। क्या तुम्हें अपनी कीमती पोशाक छोड़ने का मलाल नहीं है?

कालियायेव : *(हँसता है)* यह सच है कि मुझे उसका गुमान था।*(स्तेपान और अन्नेकोव से)* मैंने दो महीने खोमचेवालों को देखने-बूझने में लगाए और फिर एक महीना अपने छोटे कमरे में उनकी नकल करने में। मेरे साथवालों को किसी तरह का शक नहीं हुआ। वे कहते मैं एक सफल बिक्रेता हूँ जो जार के बाल तक बेच सकता है और वे भी मेरी नकल उतारते थे।

दोरा : तुम्हें तो हँसी आती होगी।

कालियायेव : तुम खुद ही समझ सकती हो कि मेरे लिए हँसी रोकना मुश्किल होता था। बदली वेशभूषा, नई जिंदगी ...इन सब पर हँसी आती थी।

दोरा : मुझे रूप बदलना, बहुरूपियापन बिलकुल पसंद नहीं। *(वह अपनी पोशाक की ओर इशारा करती है)* और ये उतारी गई कीमती पोशाक। बोरिया को मेरे लिए कोई दूसरी भूमिका चुननी होगी। नाटक की अभिनेत्री। मैं सीधी-सादी हूँ।

कालियायेव : *(हँसते हुए)* तुम इस पोशाक में खूबसूरत लगती हो।

दोरा : मुझे इस बात से संतोष होता लेकिन ऐसा सोचना मुश्किल है।

कालियायेव : क्यों? दोरा तुम्हारी आँखें सदा उदास रहती हैं। तुम्हें सदा खुश और आत्मविश्वास से भरा रहना चाहिए। सौंदर्य और आनंद दोनों हकीकत है। एक शांत परिवेश जहाँ तुम मेरी ख्वाहिश हो।

दोरा : *(हँसते हुए)* जहाँ हर साँस में अक्षय बसंत है।

कालियायेव : आह! दोरा तुम्हें यह कविता याद है। तुम हँसती हो?मैं कितना खुश हूँ।

स्तेपान : *(टोकते हुए)* हम लोग वक्त बरबाद कर रहे हैं। बोरिया, मैं समझता हूँ कि हमें दरवान को आगाह कर देना है।

(कालियायेव उसे अचरज भरी निगाह से देखता है)

अन्नेकोव : हाँ, दोरा तुम्हें नीचे जाना है? टिप देना न भूलना। वोइनोव तुम्हें कमरे में सामग्री इकट्ठा करने में सहायता करेगा।

(अन्नेकोव सभी को एक किनारे करता है, स्तेपान संकल्प भरे कदमों के साथ अन्नेकोव की तरफ बढ़ता है)

स्तेपान : मैं बम फेंकना चाहता हूँ।

अन्नेकोव : नहीं स्तेपान – कौन फेंकेगा यह तय हो चुका है।

स्तेपान : तुमसे मेरी प्रार्थना है। तुम जानते हो कि मेरे लिए यह कितना महत्वपूर्ण है।

अन्नेकोव : नहीं, नियम नियम है। *(चुप्पी)* मैं स्वयं उसे नहीं फेंकूँगा और मुझे यहाँ इंतजार करना है। नियम कठोर है।

स्तेपान : पहला बम कौन फेंकेगा?

कालियायेव : मैं। वोइनोव दूसरा बम फेंकेगा।

स्तेपान : तुम?

कालियायेव : तुम्हें इस पर अचरज हो रहा है, क्या तुम्हें मुझ पर भरोसा नहीं?

स्तेपान : इसमें अनुभव की जरूरत होती है।

कालियायेव : अनुभव? तुम्हें मालूम है कि कोई भी बम एक ही बार फेंकता है और उसके बाद... किसी ने भी कभी दो बार नहीं फेंका है।

स्तेपान : इसके लिए मजबूत हाथ की जरूरत होती है।

कालियायेव : *(अपना हाथ दिखलाते हुए)* देखो! क्या तुम समझते हो कि यह काँपेगा?

(स्तेपान निगाह फेर लेता है)

कालियायेव : यह नहीं काँपेगा। जबकि अत्याचारी मेरे सामने होगा तब क्या मैं, हिचकूँगा? तुम्हें यह शक कैसे हुआ? अगर मेरा हाथ काँपेगा तो भी ग्रैंड ड्यूक को मारने की दूसरी निश्चित तरकीब मेरे पास होगी।

अन्नेकोव : कैसे?

कालियायेव : अपने को घोड़े के आगे फेंक कर।

अन्नेकोव : नहीं इसकी जरूरत नहीं होगी। कोशिश बच निकलने की होनी चाहिए। संगठन को तुम्हारी जरूरत है। तुम्हें खुद अपने को बचाना चाहिए।

कालियायेव : मैं आज्ञा पालन करूँगा, मेरे लिए कितने बड़े सम्मान की बात है। काश! मैं इस सम्मान के योग्य बन सकूँ।

अन्नेकोव : स्तेपान, तुम गली में रहोगे जिस समय यानेक और अलेक्सी बग्घी के

इंतजार में रहेंगे। तुम नियमित रूप से हमारी खिड़की के सामने आते-जाते रहोगे और हमारे बीच संकेत तय रहेगा। मैं और दोरा उस क्षण का इंतजार करते रहेंगे जब घोषणापत्र फेंका जाएगा। अगर हमें थोड़ा भी मौका मिला, तो ग्रैंड ड्यूक का खात्मा हो जाएगा।

कालियायेव : *(आह्लादित हो)* हाँ, उसे मैं खतम करूँगा। अगर सफल हुआ तो कितने गौरव की बात होगी। ग्रैंड ड्यूक, वह तो कुछ भी नहीं है। हमें और ऊँची हस्तियों को खतम करना है।

अन्नेकोव : ग्रैंड ड्यूक, पहला निशाना है।

कालियायेव : अगर हम असफल हुए बोरिया? हमें जापानियों की नकल करनी चाहिए।

अन्नेकोव : तुम क्या कहना चाहते हो?

कालियायेव : युद्ध में जापानी आत्मसमर्पण नहीं क़रते, आत्महत्या कर लेते हैं।

अन्नेकोव : नहीं, आत्महत्या की बात मत सोचो।

कालियायेव : क्यों नहीं?

अन्नेकोव : नए सिरे से आतंक के लिए।

स्तेपान : *(नीच से)* आत्महत्या करने के लिए खुद से गहरा प्रेम होना जरूरी है। एक सच्चा क्रांतिकारी आत्म-रत नहीं हो सकता।

कालियायेव : *(तपाक से मुड़ते हुए)* एक सच्चा क्रांतिकारी? तुम्हारा मेरे प्रति ऐसा रुख क्यों है? मैंने ऐसा क्या किया है?

स्तेपान : मैं उन्हें पसंद नहीं करता जो खुद से ऊब के कारण क्रांति का वरण करते हैं।

अन्नेकोव : स्तेपान!

स्तेपान : *(उठ कर उनकी ओर आता है)*—हाँ, मैं निर्मम और बर्बर हूँ। लेकिन मेरे लिए नफरत दावँ पर नहीं है। हम लोग इस काम में आत्मप्रशंसा या तुष्टि के लिए नहीं हैं। हम लोग इस काम में सफलता के लिए लगे हैं।

कालियायेव : मेरे खिलाफ तुम आक्रामक क्यों हो रहे हो? तुम्हें किसने कहा कि मैं अपने से ऊबा हुआ हूँ।

स्तेपान : यह नहीं कह सकता। तुम संकेत बदल देते हो। तुम्हें फेरीवाले की भूमिका अदा करने में मजा आता है। तुम कविता पाठ करते हो, तुमने कहा कि तुम घोड़ों के नीचे अपने को डाल दोगे और अब आत्महत्या की बात, *(वह उसकी ओर देखता है)* मुझे तुम्हारे ऊपर भरोसा नहीं है।

कालियायेव : *(अपने ऊपर काबू करते हुए)* मित्र,तुम मुझे नहीं जानते हो। मुझे जीवन से प्यार है। मैं जीवन से ऊबा नहीं हूँ। मैं क्रांतिकर्म में इसीलिए लगा क्योंकि मुझे जीवन से प्यार है।

स्तेपान : मुझे जीवन से नहीं, न्याय से प्रेम है जो जीवन से परे है।

कालियायेव : *(स्पष्ट दिखनेवाले प्रयास के साथ)* हर कोई अपने ढंग से न्याय खोजता है। हमें यह मान लेना चाहिए कि हम एक दूसरे से भिन्न हैं। अगर संभव हो तो हमें खुद से प्यार करना चाहिए।

स्तेपान : हम सब यह नहीं कर सकते।

कालियायेव : *(उत्तेजना के साथ)* तो फिर तुम हम लोगों के बीच क्यों हो?

स्तेपान : मैं एक आदमी की हत्या के लिए आया हूँ, उससे प्यार करने नहीं, न लोगों की भिन्नता को सर चढ़ाने।

कालियायेव : *(रोष भरे स्वर में)* तुम अकेले उसकी हत्या नहीं करोगे और न बिना यह बताए कि इसके पीछे कौन संगठन है। तुम हम लोगों के साथ मिल कर उसकी हत्या करोगे और रूसी जनता के नाम से करोगे।

स्तेपान : *(उसी मुद्रा में)* मुझे इसकी जरूरत नहीं है। एक रात अचानक मुझे इसका औचित्य दिखा और सदा के लिए तीन साल का कारावास। मैं इसे बरदाश्त नहीं कर सकता था।

अन्नेकोव : बहुत हुआ। क्या तुम पागल हो गए हो, तुम्हें याद है कि हम लोग कौन हैं? हम साथी हैं, एक दूसरे से गुँथे हुए, जुड़े हुए अत्याचारी की हत्या के लिए ताकि मुल्क आजाद हो सके। हम सब इस हत्या में शरीक हैं और हमें कुछ भी एक दूसरे से अलग नहीं कर सकता। *(चुप्पी! वह सब पर नजर डालता है)* आओ, स्तेपान हम संकेतों को समझ लें...

(स्तेपान बाहर जाता है)

अन्नेकोव : *(कालियायेव से)* यह कोई ख़ास बात नहीं है। स्तेपान ने कष्ट झेला है। मैं उससे बात करूँगा।

कालियायेव : *(चेहरे का रंग उड़ा हुआ है)* बोरिया, वह मुझे अपमानित करता है।

(दोरा का प्रवेश)

दोरा : *(कालियायेव को देख कर)* माजरा क्या है?

अन्नेकोव : कुछ नहीं! *(वह बाहर जाता है)*

दोरा : *(कालियायेव से)* माजरा क्या है?

कालियायेव : हम दोनों अभी ही उलझ गए हैं। वह मुझसे प्यार नहीं करता।

(दोरा शांत हो बैठ जाती है; कुछ समय बीतता है)

दोरा : मेरा ख्याल है कि वह किसी को भी प्यार नहीं करता। जब सब कुछ समाप्त हो जाएगा, वह फिर खुश हो जाएगा। दुखी मत हो।

कालियायेव : मैं दुःखी हूँ। मुझे तुम सभी के प्यार की जरूरत है। हमने संगठन के लिए सब कुछ का परित्याग कर दिया है। मेरा सहारा क्या है, अगर हमारे साथी ही मुझसे विमुख हो जाएँ? कभी-कभी मुझे लगता है कि वे मुझे समझ नहीं पाते। क्या दोष मेरा है? मैं कुछ अव्यावहारिक हूँ यह मैं जानता हूँ...

दोरा : वे तुमसे प्यार करते हैं और तुम्हें समझते हैं। स्तेपान थोड़ा भिन्न है।

कालियायेव : ऐसा नहीं है। मैं जानता हूँ कि वह क्या सोचता है। स्वाइत्जर यह पहले ही कह चुका है 'क्रांतिकारी होना बिलकुल विलक्षण बात है।' मैं उसे समझाना चाहता था कि मुझमें कुछ भी विलक्षण नहीं है। वे मुझे थोड़ा पागल समझते हैं, भावना में बह जानेवाला। हालाँकि मैं उन्हीं जैसा आदर्शों में विश्वास करता हूँ। उन्हीं की तरह मैं आत्मबलिदान करना चाहता हूँ। उन्हीं की तरह मैं भी कुशल, मौन, फनकार और सफल हो सकता हूँ। फिर भी मुझे जीवन सदा भव्य लगता है। मुझे सुंदरता और खुशहाली से प्रेम है। इसीलिए तो मैं तानाशाही से नफरत करता हूँ। इस स्थिति को कैसे समझाया जाय? क्रांति, जरूर हो, लेकिन क्रांति जीवन के लिए, जीवन को मौका देने के लिए, क्या मेरी बात समझती हो?

दोरा : *(उत्साह से)* हाँ... *(थोड़ी चुप्पी के बाद)* फिर भी हम मौत को अंजाम देने जा रहे हैं।

कालियायेव : कौन, हम लोग? ...तुम क्या कहना चाहती हो... लेकिन दोनों चीजें एक ही नहीं हैं। नहीं, नहीं, एक ही चीज नहीं है। आखिर हत्या हम एक ऐसी दुनिया बनाने के लिए कर रहे हैं जहाँ कोई भी हत्या नहीं करेगा। हम अपराधी बनना इसलिए कबूल कर रहे हैं ताकि संसार में निर्दोष जन ही रहें।

दोरा : लेकिन अगर ऐसा नहीं हो तब?

कालियायेव : तुम चुप रहो, तुम यह अच्छी तरह जानती हो कि यह असंभव है। तब तो स्तेपान का तर्क सही होगा और लोग सुंदरता की प्रतिमा पर थूकेंगे।

दोरा : मैं संगठन में तुमसे पुरानी हूँ, पहले से हूँ। मैं जानती हूँ कि कुछ भी सरल नहीं है। लेकिन तुम में आस्था है... हम सबों को आस्था की आवश्यकता है।

कालियायेव : आस्था? नही, वह तो सिर्फ एक को थी।

दोरा : तुम में आत्मबल है। और तुम गंतव्यं तक पहुँचने के लिए सभी बाधाओं को पार कर लोगे। तुमने पहला बम फेंकने का आग्रह क्यों किया?

कालियायेव : क्या कोई बिना ऐसा किए आतंकवादी कार्यकर्ता होने की बात कर सकता है।

दोरा : नहीं।

कालियायेव : इसके लिए पहली कतार में रहना जरूरी है।

दोरा : *(वह कुछ चिंतित दिखती है)* हाँ इसमें पहली कतार भी है और अंतिम पल भी। हमें इस पर सोचना चाहिए। वहाँ साहस है और उत्साह है जिसकी हमें जरूरत है जिसकी तुम्हें जरूरत है।

कालियायेव : एक साल से मैं कुछ भी दूसरा नहीं सोच सकता था। मैं इसी पल के लिए अब तक जिंदा रहा हूँ। और मैं अब जानता हूँ कि मेरी इच्छा ग्रैंड ड्यूक की बगल में ही नष्ट हो जाने की है। अपने रक्त की अंतिम बूँद वहीं बहा देने की या बम की ज्वाला में भस्म हो जाने की जिसमें मेरे बाद मेरा कुछ भी न बचे। तुम समझ रही हो कि मैं क्यों पहला बम फेंकना चाहता हूँ। विचार के लिए मरना ही एक मात्र रास्ता है, विचार की ऊँचाई को छू पाने का। यही इसका औचित्य है।

दोरा : मुझे भी ऐसी ही मृत्यु की कामना है।

कालियायेव : यह एक शुभ घड़ी है, जिसके लिए ईर्ष्या होनी चाहिए। रात में कभी कभी जब मैं फेरीवाले के अपने बिस्तर पर सोने जाता हूँ तो एक ही विचार मुझे परेशान करता है – उन्होंने हमें हत्यारा बना दिया है। लेकिन इसी समय मेरे मन में यह ख्याल आता है कि मैं भी मरने जा रहा हूँ और फिर मेरे मन को शांति मिल जाती है। मैं हँसता हूँ और एक बच्चे की तरह सिमट जाता हूँ।

दोरा : ऐसा होना अच्छा है यानेक, मारना और मरना। लेकिन मेरी समझ से यह खुशकिस्मती बहुत दुर्लभ है *(एक पल कालियायेव उसे देखता है, वह अपनी निगाह नीची करती है)*

कालियायेव : *(उत्तेजना के साथ)* मुझे एक ख्याल आता है। मारने के पल में मर जाना कुछ चीजों को अधूरा छोड़ जाता है। इसके विपरीत अपने कर्म और

फाँसी के फंदे का अंतराल एक अनंत होता है शायद मानव के लिए एक मात्र अनंत।

दोरा : *(उसका हाथ थाम कर जोर देते हुए बोलती है)* तुम्हारे विचार ही तुम्हारी सहायता करेंगे। हम जितने के हकदार हैं उससे कहीं बड़ी कीमत हमें चुकानी पड़ती है।

कालियायेव : तुम क्या कहना चाहती हो?

दोरा : हत्या करना हमारी मजबूरी है, है न? हम लोग सोच-समझ कर सिर्फ एक और एक ही जान लेते हैं?

कालियायेव : हाँ।

दोरा : लेकिन हत्या को अंजाम देना और फिर फाँसी के फंदे तक पहुँचना। दो बार जीवन देना है। हम मुनासिब से अधिक कीमत चुकाते हैं।

कालियायेव : हाँ, यह दोहरी मौत है। शुक्रिया दोरा। कोई भी हमें इसके लिए दोष नहीं दे सकता। अब मुझे खुद पर पूरा भरोसा है। *(चुप्पी)* क्या बात है दोरा? तुम चुप हो गई।

दोरा : फिर भी मैं तुम्हारी मदद करना चाहती हूँ। अकेले ...

कालियायेव : अकेले?

दोरा : नहीं, मैं पागल हूँ।

कालियायेव : तुम्हें मुझ पर भरोसा नहीं है?

दोरा : आह, प्यारे,मेरा खुद पर भरोसा टूटने लगा है। स्वाइत्जर की मृत्यु के बाद से मेरे भीतर अजीब तरह के विचार आते रहते हैं और उनके बारे में बतलाना मेरा काम नहीं है।

कालियायेव : मुझे कठिनाइयों से प्रेम है। अगर तुम मेरा आदर करती हो तो बताओ।

दोरा : *(कालियायेव को निहारते हुए)* मैं जानती हूँ। तुम साहसी हो। यही बात मुझे चिंतित करती है। तुम हँसते हो, तुम उत्साहित रहते हो, तुम आत्मबलिदान के लिए खुशी से कदम बढ़ाते हो। लेकिन किसी समय यह स्वप्न भंग हो सकता है और दूसरे विचार आ सकते हैं। शायद पहले से आगाह कर देना ठीक होता है किसी अनपेक्षित दुर्बलता के बारे में।

कालियायेव : मुझमें कोई दुर्बलता नहीं आएगी जो भी मन में है बोल दो।

दोरा : ठीक है। मारना और फिर फाँसी का फंदा, दो बार मरना, यह सब तो आसान है। तुम्हारा दिल इसे आसानी से झेल लेगा। लेकिन इसके

पहले... *(वह चुप हो जाती है, कालियायेव को देखती है, हिचकती है)* सबसे पहले तो तुम्हें उस पर निगाह डालनी होगी।

कालियायेव : किस पर?

दोरा : ग्रैंड ड्यूक पर।

कालियायेव : मुश्किल से एक सेकेंड के लिए।

दोरा : एक सेकेंड जहाँ से तुम उसे देखोगे। आह यानेक, यह जरूरी है कि तुम समझो, यह जरूरी है कि तुम्हें पहले आगाह कर दिया जाय, तुम्हें रोक दिया जाय। आखिर आदमी आदमी है। संभव है ग्रैंड ड्यूक की आँखों में सहानुभूति हो। तुम उसे कान खुजलाते हुए या खुल कर हँसते हुए देखोगे। किसे मालूम उसके गाल पर उस्तुरे का दाग हो। अगर उसी क्षण वह तुम पर निगाह डाले।

कालियायेव : मैं उसका वध नहीं करूँगा। मैं तानाशाही का वध करूँगा।

दोरा : निःसंदेह, निःसंदेह। तानाशाही का वध जरूरी है। मैं बम बनाती हूँ और नली लगाते समय, तुम जानते हो वही सबसे कठिन समय होता है – मेरे मन में एक अजीब आनंद रहता है। लेकिन मैं ग्रैंड ड्यूक को नहीं जानती। और वह भारी असमंजस की घड़ी होगी अगर वह उसी घड़ी मेरे सामने बैठा हो। और तुम तो उसे करीब से देखोगे। बहुत ही करीब से।

कालियायेव : *(उत्तेजना के साथ)* मैं! उसे नहीं देखूँगा।

दोरा : कैसे? क्या अपनी आँखें बंद कर लोगे?

कालियायेव : नहीं, लेकिन ईश्वर सहायक हो, ऐन मौके पर नफरत उमड़ कर मुझे अंधा बना देगी।

(घंटी की आवाज; एक बार; वे एकदम खामोश हो जाते हैं; स्तेपान और वोइनोव का प्रवेश; बगल के कमरे में आवाज; अन्नेकोव प्रवेश करता है)

अन्नेकोव : दरबान है। ग्रैंड ड्यूक कल थियेटर में आएगा। दोरा सब कुछ तैयार रहना चाहिए।

दोरा : *(दोरा भारी मन से)* हाँ। *(धीरे से बाहर जाती है)*

कालियायेव : *(उसे जाते देखता है और स्तेपान की तरफ घूम कर नरम आवाज में)* मैं सहर्ष उसकी हत्या करूँगा।

(परदा गिरता है)

दृश्य : दो

(अन्नेकोव खिड़की पर है; दोरा टेबुल की बगल में)

अन्नेकोव : सभी नियत स्थान पर हैं। *(स्तेपान ने अपना सिगरेट जलाया है)*

दोरा : ग्रैंड ड्यूक को वहाँ से कितने बजे गुजरना चाहिए?

अन्नेकोव : बस पल दो पल में। सुनो, क्या यह बग्घी की आवाज नहीं है, नहीं।

दोरा : तुम बैठो। धीरज रखो।

अन्नेकोव : और बम?

दोरा : तुम बैठो। अब हमारे लिए कुछ भी करने को नहीं है।

अन्नेकोव : हाँ, उनसे ईर्ष्या होती है।

दोरा : तुम प्रधान हो। तुम्हारी जगह यहीं है।

अन्नेकोव : मैं प्रधान हूँ। लेकिन यानेक का महत्व हमसे अधिक है और शायद वही...

दोरा : जोखिम सबके लिए समान है। जो बम फेंकेंगे और जो नहीं फेंकेंगे, दोनों के लिए।

अन्नेकोव : अंतिम रूप से तो जोखिम सबके लिए समान है। लेकिन तत्काल यानेक और अलेक्सी ही पहली कतार में है। मैं जानता हूँ कि मुझे उनके साथ नहीं होना चाहिए। फिर भी कभी-कभी मुझे लगता है कि मैं बहुत आसानी से अपनी भूमिका कबूल कर लेता हूँ। आखिरकार यह सुविधाजनक है कि बम फेंकने के लिए मुझे बाध्य नहीं किया जाय।

दोरा : ऐसा है तो भी क्या? मुख्य बात यह है कि जो जरूरी है वही तुम करो, और आखिरी दम तक।

अन्नेकोव : निःसंदेह, दोरा।

दोरा : सोचो, मैं तीन वर्ष से डरी हुई हूँ। ऐसा डर जो रात में नींद आने पर ही जाता है और सुबह नींद खुलते ही फिर हावी हो जाता है। सो यह जरूरी है कि मैं इससे अभ्यस्त हो जाऊँ। मैंने उन क्षणों में शांत रहना सीख लिया है जब डर सबसे ज्यादा होता है। इसमें गर्व करने की कोई बात नहीं है।

अन्नेकोव : नहीं, गर्व की बात तो है ही। मैंने तो किसी भावना पर काबू नहीं पाया है। क्या तुम्हें पता है कि मुझे बीते दिनों के लिए मलाल है, मस्ती के दिन, औरतें... मुझे सुरा और सुंदरियों से प्रेम था, उन रातों से जो खत्म

नहीं होतीं।

दोरा : मुझे इसका आभास था, बोरिया। इसी कारण मुझे तुमसे विशेष स्नेह है। तुम्हारा दिल जिंदा है। अगर तुम्हें अभी भी आनंद की चाहत है तो यह उस खौफनाक चुप्पी से बेहतर है जो कभी-कभी आर्तनाद की भी जगह ले लेती है।

अन्नेकोव : तुम क्या कह रही हो? तुम? क्या यह संभव है?

दोरा : सुनो। *(दोरा अचानक खड़ी हो जाती है; गाड़ी की आवाज फिर खामोशी)* नहीं यह वह नहीं है। मेरा दिल धड़क रहा है। तुम देख ही रहे हो, मैं कुछ भी सीख नहीं पाई हूँ।

अन्नेकोव : *(वह खिड़की के पास जाता है)* ध्यान दो। स्तेपान ने संकेत दिया है। वही है।

(दरअसल बग्घी की दूर से आवाज सुनाई पड़ती है, जो धीरे-धीरे खिड़की के नीचे तक आती है और फिर दूर होती चली जाती है; लंबे समय तक खामोशी)

अन्नेकोव : कुछ ही सेकेंड में।

(वे किसी आवाज के लिए कान देते हैं)

अन्नेकोव : इतना विलंब क्यों?

(दोरा कुछ इशारा करती है; लंबी चुप्पी; दूर से घंटे की आवाज आती है)

अन्नेकोव : यह असंभव लगता है। यानेक को अब तक बम फेंक देना था। बग्घी को थियेटर तक आ जाना चाहिए था और अलेक्सी? देखो, स्तेपान वापस आकर जल्दी थियेटर की ओर जा रहा है।

दोरा : *(उसकी ओर नजर डालते हुए)* यानेक गिरफ्तार हो गया। वह जरूर गिरफ्तार हो गया है। कुछ करना जरूरी है।

अन्नेकोव : इंतजार करो। *(वह आहट लेता है)* सब कुछ खत्म है।

दोरा : यह सब कैसे हो गया? यानेक बिना कुछ किए ही गिरफ्तार हो गया। वह सब कुछ के लिए तैयार था, यह मैं जानती हूँ। वह जेल जाने और मुकदमे के लिए तैयार था लेकिन ग्रैंड ड्यूक को मारने के बाद। इसके पहले नहीं, कतई इससे पहले नहीं।

अन्नेकोव : *(बाहर की ओर देखते हुए)* वोइनोव! जल्दी!

(दोरा दरवाजा खोलती है; वोइनोव का प्रवेश : चेहरा उतरा हुआ)

अन्नेकोव : अलेक्सी, जल्दी बोलो।

वोइनोव : मुझे कुछ पता नहीं। मैं पहले बम फेंके जाने के इंतजार में था। मैंने गाड़ी

को मोड़ से निकलते देखा पर कुछ नहीं हुआ। मैं किंकर्तव्यविमूढ़ हो गया। मुझे लगा कि तुमने आखिरी वक्त पर योजना बदल दी, मैं असमंजस में पड़ गया और फिर यहाँ भाग आया...

अन्नेकोव : और यानेक?

वोइनोव : मैंने उसे नहीं देखा।

दोरा : वह गिरफ्तार हो गया है।

अन्नेकोव : *(बाहर की ओर देखते हुए)* वह देखो!

(वही स्थान और स्थिति; कालियायेव आता है, उसका चेहरा आँसुओं से भीगा हुआ है)

कालियायेव : *(कातर भाव से)* साथियो, मुझे माफ करना, मैं नहीं कर सका।

(दोरा उसकी ओर जाती है और उसका हाथ थाम लेती है)

दोरा : कोई खास बात नहीं है। कभी-कभी अंतिम क्षण में सभी असमर्थ हो जाते हैं।

अन्नेकोव : लेकिन यह असंभव है।

दोरा : रहने दो। तुम अकेले नहीं हो, यानेक। स्वाइत्जर भी पहली बार नहीं कर पाया था।

अन्नेकोव : यानेक, क्या तुम डर गए?

कालियायेव : *(उत्तेजना के साथ)* डर, नहीं। डरने का हमें अधिकार नहीं है।

(तय संकेत के अनुसार दस्तक; वोइनोव अन्नेकोव के इशारे पर बाहर जाता है; कालियायेव जमीन पर पस्त पड़ा है; खामोशी; स्तेपान का प्रवेश)

अन्नेकोव : बोलो क्या हुआ?

स्तेपान : ग्रैंड ड्यूक की गाड़ी में बच्चे थे।

अन्नेकोव : बच्चे?

स्तेपान : हाँ, ग्रैंड ड्यूक का भतीजा और उसकी भतीजी।

अन्नेकोव : वोइनोव के अनुसार तो ग्रैंड ड्यूक को अकेले ही होना था।

स्तेपान : साथ ही ग्रैंड डचेस भी थी। मुझे लगता है कि हमारे कवि के लिए यह तो सारा संसार था। सौभाग्य से जासूसों को कुछ भी पता नहीं चला।

(अन्नेकोव धीमी आवाज में स्तेपान से बात करता है; सभी कालियायेव को देख रहे हैं जो उनकी ओर निगाह उठाता है)

कालियायेव : *(अन्यमनस्क भाव से)* मैं इस स्थिति की कल्पना या पूर्वानुमान नहीं कर सकता था। बच्चों का, खासकर बच्चों का। क्या तुमने बच्चों को देखा

है? उनके गंभीर भाव जो कभी-कभी वे अपनाते हैं, मैं कभी भी इस भाव को सहन नहीं कर सकता। एक सेकेंड पहले उस छोटे घर के कोने की छाया में मैं बहुत प्रसन्न था। जब बग्घी के लालटेन दूर से चमकने लगे मेरा दिल खुशी से धड़कने लगा, यह मैं शपथपूर्वक कह सकता हूँ। जैसे-जैसे बग्घी के चक्कों की आवाज बढ़ती गई वैसे-वैसे मेरे दिल की धड़कन तेज होती गई। मेरी इच्छा उछलने की होने लगी। मुझे लगा कि मैं हँस दूँगा। और मैंने सोचा – अच्छा, अच्छा। तुम समझ रहे हो?

(उसने स्तेपान पर से निगाह हटा ली और फिर हताशा के भाव में आ गया)

मैं बग्घी की तरफ लपका। यही वह पल था जब मेरी निगाह उन पर पड़ी। वे हँस नहीं रहे थे। वे सीधे बैठे थे और शून्य में ताक रहे थे। ऐसा लगता था कि उन पर उदासी छाई हुई है। दरबान के सामने पड़ जाने के कारण मैं ग्रैंड डचेस को नहीं देख सकता था। मैंने सिर्फ बच्चों को ही देखा। अगर उन्होंने मुझ पर निगाह डाली होती तो मैं बम फेंक देता कम से कम उनकी उदास निगाह से बचने के लिए। लेकिन वे लगातार अपने आगे ही देखते रहे।

(उसने अपनी निगाह औरों की तरफ कर ली और धीरे से आगे बोलते रहा)

उसके बाद मुझे इसका कोई ध्यान नहीं कि क्या हुआ? मेरी भुजाएँ शिथिल हो गईं। मेरे पैर काँपने लगे। एक सेकेंड बाद सब कुछ बीत चुका था। *(खामोशी; उसने निगाह जमीन पर गड़ा ली)* दोरा, क्या मैं सपने में बोल रहा हूँ। मुझे लगता है कि इसी क्षण घड़ी का घंटा बज रहा है?

दोरा : नहीं, यानेक तुम सपने में नहीं बोल रहे हो।

(वह अपना हाथ उसकी बाँह पर रखती है; कालियायेव सिर उठाता है और पाता है कि सभी उसकी ओर देख रहे हैं; वह उठता है)

कालियायेव : मेरी ओर देखो मेरे साथी बोरिया, मेरी ओर देखो। मैं कायर नहीं हूँ, मैं पीछे नहीं हटा। मैं इस स्थिति की कल्पना नहीं करता था। सब कुछ अचानक हो गया। वे दो छोटे संजीदा मुखड़े और हाथ का यह भयानक वजन मुझे उन्हीं पर फेंकना होता। ओह, नहीं, मैं यह नहीं कर सका।

(वह कभी एक पर और कभी दूसरे पर अपनी नजर डालता है)

कभी जब मैं युक्रेन में गाड़ी चलाता था। मैं पवन की चाल से चलता था, मुझे किसी चीज का डर नहीं था। दुनिया में किसी चीज का डर नहीं

होता था, सिर्फ किसी बच्चे को ठोकर मारने के। मैंने उस आघात की कल्पना की जब बच्चों के कोमल सिर पूरी गति से सड़क से टकरा कर क्षत-विक्षत हो जाएँगे। *(वह चुप हो जाता है)* मेरी मदद करो *(चुप्पी)* मेरी इच्छा स्वयं को मार डालने की हुई। लेकिन मैं आ गया क्योंकि मुझे लगा कि तुम्हारी राय का महत्व है क्योंकि तुम्हीं मेरे एकमात्र न्यायकर्ता हो, तुम मुझे बतलाओगे कि मैंने गलत किया या सही। तुम स्वयं को धोखा नहीं दोगे। लेकिन तुम तो कुछ भी बोल नहीं रहे।

(दोरा उसके पास आती है और उसका स्पर्श करती है। वह उसकी ओर देखता है और शोकाकुल स्वर में कहता है)

मेरा सुझाव यह है कि अगर तुम्हारा निर्णय हो कि मुझे दोनों बच्चों को मार डालना चाहिए था, तो मैं थिएटर से बग्घी की वापसी का इंतजार करूँगा और अकेले ही उस पर बम फेकूँगा। मुझे पूरा विश्वास है कि मैं निशाना नहीं चुकूँगा। निर्णय तुम्हें करना है, मैं संगठन की आज्ञा का पालन करूँगा।

स्तेपान : संगठन ने तुम्हें ग्रैंड ड्यूक को मारने की आज्ञा दी थी।

कालियायेव : यह सच है, लेकिन मुझे बच्चों को मारने की आज्ञा नहीं दी थी।

अन्नेकोव : यानेक सही है। यह अप्रत्याशित स्थिति थी।

स्तेपान : उसे आज्ञा पालन करना था।

अन्नेकोव : जवाबदेही मेरी है। यह आवश्यक था कि सभी संभावित स्थितियों का ध्यान रखा जाता ताकि क्या करना है इस पर किसी हिचक की गुंजाइश नहीं रहती। हमें सिर्फ यह फैसला करना है कि क्या इस मौके को हाथ से जाने दिया जाय या यानेक को बग्घी की वापसी का इंतजार करने को कहा जाय।

वोइनोव : पता नहीं। मुझे लगता है कि मैं भी वही करता जैसा यानेक ने किया। मुझे खुद पर भरोसा नहीं। *(धीमी आवाज में)* मेरे हाथ काँप रहे हैं।

अन्नेकोव : दोरा?

दोरा : *(तल्खी से)* मैं भी यानेक की तरह ही पीछे हट जाती। क्या मुझे दूसरे को ऐसा कुछ करने की आज्ञा देने का अधिकार है जो मैं खुद नहीं कर सकती।

स्तेपान : क्या तुमने इस फैसले के नतीजों का लेखा-जोखा किया है? दो महीने की खुफियागिरी, दो महीने के भीषण जोखिम भरे रात-दिन और जासूसों से बचना – बेवजह दो महीने गँवाना। एगोर की गिरफ्तारी बेकार गई, रिझोव का फाँसी पर चढ़ना बेवजह गया। और एक बार फिर सब कुछ नए सिरे से? फिर हफ्तों की निगरानी और चकमे।

अन्नेकोव : तुम्हें पता है कि दो दिन में ग्रैंड ड्यूक थिएटर में पुनः आएगा।

स्तेपान : ऐसे दो दिन जिनमें हमारे पकड़े जाने की जोखिम है–यह तुम्हीं ने बताया है।

कालियायेव : मैं चला।

दोरा : सुनो! *(स्तेपान से)* स्तेपान, क्या तुम आँखें खोल कर सामने एकदम करीब से एक बच्चे पर गोली दाग सकते हो?

स्तेपान : मैं दाग सकता हूँ अगर संगठन की आज्ञा हो।

दोरा : तुमने आँखें क्यों मूँद लीं?

स्तेपान : मैंने? मैंने आँखें मूँद लीं?

दोरा : हाँ।

स्तेपान : स्थिति की ठीक कल्पना करने और उसका ठीक-ठीक आकलन कर जवाब देने के लिए।

दोरा : आँखें खोलो और समझो कि संगठन अपना प्रभाव और अपनी शक्ति उसी क्षण खो देगा जब हम अपने बमों से मासूम बच्चों की मौत को कबूल करने लगेंगे।

स्तेपान : मेरे दिल में ऐसी बकवास के लिए जगह नहीं है। जब हम बच्चों को नजरअंदाज करने का निर्णय ले लेंगे उसी समय हम संसार के मालिक बन जाएँगे और क्रांति सफल हो जाएगी।

दोरा : उसी समय सारी मानवता के लिए क्रांति नफरत की चीज बन जाएगी।

स्तेपान : इससे क्या फर्क पड़ता है अगर हमें मानवता से इतना प्रेम हो कि हम उस पर हावी हो, स्वयं उसी से उसकी रक्षा करें और गुलामी का अंत करें।

दोरा : अगर संपूर्ण मानव समुदाय क्रांति को अस्वीकार कर दे? और अगर वे तमाम लोग जिनके लिए तुम संघर्ष करते हो बच्चों की हत्या का निषेध करें? क्या तुम तब भी उन्हें मारोगे?

स्तेपान : हाँ, अगर यह जरूरी हो और तब तक जब तक उनकी समझ नहीं बदलती। जनता से मुझे भी प्रेम है।

दोरा : यह प्यार की सूरत नहीं है।

स्तेपान : ऐसा कौन कहता है?

दोरा : मैं, दोरा।

स्तेपान : तुम एक औरत हो और प्यार की तुम्हारी चेतना दया-भाव वाली है।

दोरा : *(उत्तेजना के साथ)* लेकिन क्या शर्मनाक है, इसकी मुझे बिलकुल सही समझ है।

स्तेपान : मुझे शर्म एक ही बार अपने आप पर आई और वह दूसरे की गलती के कारण। जब मुझे कोड़े लगाए गए। तुम्हें पता है कोड़े लगाए जाने का क्या अर्थ होता है? वेरा मेरी बगल में थी और उसने प्रतिरोध में आत्महत्या कर ली। मैं जीवित रहा। मुझे अब किस बात की शर्म?

अन्नेकोव : स्तेपान यहाँ सभी तुम से प्यार करते हैं और तुम्हारा आदर करते हैं। फिर भी तुम्हारे तर्क चाहे जो भी हों मैं तुम्हें यह नहीं कहने दूँगा कि कुछ भी करना जायज है। हमारे सैकड़ों साथी यही अहसास कराने के लिए शहीद हुए कि सब कुछ जायज नहीं है।

स्तेपान : अपने उद्देश्य को हासिल करने में कुछ भी वर्जित नहीं है।

अन्नेकोव : *(गुस्से में)* क्या, पुलिस के साथ मिल कर दोहरी भूमिका निभाना जायज है, जैसा एवनो का प्रस्ताव था? क्या तुम वह करोगे?

स्तेपान : हाँ, अगर जरूरी हो तो।

अन्नेकोव : *(खड़ा होकर)* स्तेपान, तुमने पहले हम लोगों के लिए और हम लोगों के साथ मिल कर जो किया है उसे देखते हुए तुमने अभी जो कुछ भी कहा है उसे हम लोग नजरअंदाज करते हैं। यहाँ सामने की एक ही बात पर ध्यान दो — सवाल यह है कि इस वक्त हमें दो बच्चों पर बम फेंकना है कि नहीं।

स्तेपान : बच्चे! तुम्हारी जुबान पर सिर्फ यही बात रहती है। क्या तुम किसी भी बात को समझ नहीं सकते। यानेक उन बच्चों को नहीं मार सका लेकिन हजारों रूसी बच्चे आनेवाले वर्षों में भूख से मरेंगे। क्या तुमने भूख से मरते बच्चों को देखा है? मैंने तो देखा है। भूख से मौत के सामने बम से मरना तो मनमोहक है। लेकिन यानेक ने उसे नहीं देखा है। उसने सिर्फ ग्रैंड ड्यूक के दो पालतू कुत्तों को ही देखा है। क्या तुम इंसानियत का हिस्सा नहीं हो? क्या तुम सिर्फ एक पल में ही जीते हो? तो फिर दान-दक्षिणा का मार्ग अपनाओ और दैनंदिन के कष्टों के निवारण में लगो, क्रांति का मार्ग नहीं जिससे एकबारगी सभी वर्तमान और आनेवाली

बुराइयाँ खत्म हो जाएँ।

दोरा : यानेक ने ग्रैंड ड्यूक को मारने का निर्णय इसलिए लिया ताकि वह दिन करीब आए जब रूसी बच्चे भूख से नहीं मरें। लेकिन ड्यूक के भतीजों की मौत से किसी बच्चे की भुखमरी पर रोक नहीं लगती। विध्वंस की प्रक्रिया में भी कुछ तारतम्य होता है, इसमें कुछ सीमाएँ होती हैं।

स्तेपान : *(उत्तेजित होकर)* कहीं कोई सीमा नहीं होती। हकीकत यह है कि तुम क्रांति में विश्वास नहीं करते *(यानेक को छोड़ सभी उठ खड़े होते हैं)* तुम्हारी उसमें आस्था नहीं है। अगर तुम्हें क्रांति में समग्र और संपूर्ण विश्वास होता, अगर तुम्हें भरोसा होता कि हमारे आत्मबलिदान और हमारी सफलता से हम अधिनायकवाद से मुक्त रूस का निर्माण करेंगे, आजादी की ऐसी सरजमीं जो अंततः संसार भर में फैल जाएगी। अगर तुम्हें इस पर संदेह नहीं है कि अपने शासकों से और अंधभक्ति से मुक्त मनुष्य आगे बढ़ेगा और अपना मस्तक ऊँचा करेगा तो फिर दो बच्चों की मौत को क्यों महत्व देते हो? तुम मुझे समझ रहे हो? अगर यह मौत तुम्हें रोकती है तो इसका अर्थ है कि तुम्हें क्रांति करने के अपने अधिकार पर भरोसा नहीं है। तुम्हें क्रांति पर भरोसा नहीं है।

(चुप्पी; कालियायेव उठता है)

कालियायेव : स्तेपान मैं अपने पर शरमिंदा हूँ, फिर भी मैं तुम्हें टोके बिना नहीं रह सकता। मैंने हत्या करना इसलिए कबूल किया क्योंकि मैं अधिनायकवाद को उखाड़ फेंकना चाहता हूँ। लेकिन तुम जो कुछ कह रहे हो उसके पीछे एक नए अधिनायकवाद का उद्घोष है जो अगर अस्तित्व में आता है तो मैं एक हत्यारे की श्रेणी में आ जाऊँगा जबकि मेरा प्रयास एक न्यायकर्ता बनने का है।

स्तेपान : क्या फर्क पड़ता है अगर तुम्हारी भूमिका न्यायकर्ता की नहीं हो लेकिन न्याय की स्थापना हत्या द्वारा ही होती हो। तुम और मैं कुछ भी नहीं हैं।

कालियायेव : हमलोग कुछ विशेष हैं और तुम इसे खूब जानते हो। फिलहाल यह तुम्हारा अहं है जो बोल रहा है।

स्तेपान : मेरा अहं मेरे तक सीमित है। लेकिन मनुष्य का अहं, उसकी बगावत, अन्याय जहाँ उसका अस्तित्व है, वह हम सबका मामला है।

कालियायेव : मनुष्य न्याय, सिर्फ न्याय के तहत जीवित रहता है।

स्तेपान : जिनकी रोटी छीन ली गई है, कैसे जीएँगे अगर न्याय न हो?

कालियायेव : न्याय और निर्दोषिता, भोलेपन से।

स्तेपान : भोलापन? मुझे संभवतः इसका ज्ञान है। लेकिन मैंने इसे स्वयं नजरअंदाज करने का फैसला किया और हजारों दूसरे लोगों द्वारा नजरअंदाज कराया ताकि उनके लिए भी यह एक दिन एक महान अर्थ ले ले।

कालियायेव : इसके लिए उस दिन के आगमन का भरोसा जरूरी है जब वह सब जो जीवन का आकर्षण है, नकार दिया जाय।

स्तेपान : मुझे इसका भरोसा है।

कालियायेव : यह नहीं हो सकता। यह जानने के लिए कि मैं सही हूँ या तुम, संभवतः तीन पीढ़ियों की बलि देनी होगी – अनेक युद्ध और खूनी क्रांतियाँ। जब तक धरती पर इनके खून की नदियाँ सूखेंगी तब तक हम और तुम मिट्टी में मिल कर विलीन हो चुके होंगे।

स्तेपान : फिर दूसरे आएँगे और मैं उन्हें अपना साथी मान सलाम करता हूँ।

कालियायेव : *(चिल्लाते हुए)* दूसरे... हाँ। लेकिन मैं उनसे प्यार करता हूँ जो आज जीवित हैं, इसी धरती पर जहाँ मैं हूँ और मैं उन्हें ही सलाम करता हूँ। मैं उन्हीं के लिए संघर्ष करता हूँ और उन्हीं के लिए मरने को तैयार हूँ। एक दूर-दराज नगर बसाने के लिए, जिसकी सफलता में संदेह है, मैं अपने मित्रों के सिर को क्षत-विक्षत करने को तैयार नहीं। मैं जीवित अन्याय की लड़ी में मृत न्याय के नाम पर और कड़ी नहीं जोड़ सकता। *(धीमी पर दृढ़ आवाज में)* साथियो, मैं तुम लोगों से साफ-साफ कहना चाहता हूँ कम से कम वही बात, जो एक सीधा-सादा किसान कहेगा – बच्चों की हत्या मर्यादा के विरुद्ध है। अगर मेरे जीते जी क्रांति मर्यादाहीन होती दिखी तो मैं उससे मुँह मोड़ लूँगा। अगर तुम्हारा निर्णय हो तो मैं इसी समय थिएटर के बाहर निकलने के फाटक की तरफ जाऊँगा, लेकिन मैं स्वयं को बग्घी के घोड़े के आगे डाल दूँगा।

स्तेपान : मर्यादा उन लोगों की शोभा बढ़ाता है जिनके पास बग्घी है।

कालियायेव : नहीं, यह गरीब लोगों की अंतिम संपत्ति है। तुम लोग इस बात को अच्छी तरह जानते हो और तुम्हें यह भी मालूम है कि क्रांतियों की अपनी मर्यादा होती है। यही कारण है कि हम मरने के लिए तैयार रहते हैं। इसीलिए तुम कोड़े खाते वक्त तने रहे स्तेपान, और जो आज भी तुम्हें बोलने के लिए प्रेरित करता है।

स्तेपान : *(चिल्लाते हुए)* चुप रहो; मैं तुम्हें इसकी चर्चा करने से मना करता हूँ।

कालियायेव : *(आवेश में)* मैं चुप क्यों होऊँ? मैंने तो तुम्हें यह कहने दिया कि मेरा क्रांति में विश्वास नहीं है। तात्पर्य यह कि मैं ग्रैंड ड्यूक की हत्या निरर्थक कर सकता हूँ यानी कि मैं एक हत्यारा हूँ। मैंने तुम्हें यह सब कहने दिया और रोका नहीं।

अन्नेकोव : यानेक।

स्तेपान : कभी-कभी हम लोग अकारण ही हत्या कर देते हैं, आवश्यक हत्या से बचने के लिए।

अन्नेकोव : स्तेपान, यहाँ कोई भी तुम से सहमत नहीं है, फैसला हो चुका है।

स्तेपान : निर्णय शिरोधार्य है। फिर भी मैं कहूँगा कि आतंक की राह कोमल दिलवालों के लिए नहीं है। हम लोग हत्यारे हैं और हम लोगों ने यह बनने का निर्णय लिया है।

कालियायेव : *(आपा खो बैठता है)* नहीं, मैंने मरना इसलिए कबूल किया है ताकि हत्यारे विजयी नहीं हों। मैंने निष्कलुष होने का फैसला किया है।

अन्नेकोव : बहुत हुआ। यानेक और स्तेपान बस करो। संगठन का निर्णय है कि बच्चों की हत्या अर्थहीन है। हमें अपनी टोह एक बार फिर शुरू करनी होगी। दो दिन में काम को अंजाम देने के लिए फिर तैयार रहना है।

स्तेपान : और अगर वहाँ इस बार भी बच्चे हुए तो?

अन्नेकोव : हम फिर नए मौके की तलाश करेंगे।

स्तेपान : और, ड्यूक अगर ग्रैंड डचेस के साथ हो?

कालियायेव : मैं उसे नहीं बचाऊँगा।

अन्नेकोव : सुनो।

(बग्घी की घड़घड़ाहट; कालियायेव खिड़की पर जाने से अपने को रोक नहीं पाता; दूसरे ध्यान से सुनते हैं; बग्घी पास आती है और नीचे से गुजरती हुई चली जाती है)

वाइनोव : फिर शुरू करना होगा, दोरा...

स्तेपान : *(हिकारत के साथ)* हाँ, अलेक्सी... मर्यादा की रक्षा के लिए बहुत कुछ करना होता है।

(परदा गिरता है)

दृश्य : तीन

(दो दिन बाद, वही स्थान और वही समय)

स्तेपान : वोइनोव क्या कर रहा है? उसे वहाँ होना था।

अन्नेकोव : उसे नींद की जरूरत है और हमारे पास आधा घंटा और है।

स्तेपान : मैं सूचना दे सकता हूँ।

अन्नेकोव : नहीं, हमें जोखिम कम करनी चाहिए।

(चुप्पी)

अन्नेकोव : यानेक, तुम क्यों गुमसुम हो?

कालियायेव : मुझे कुछ कहना नहीं है। तुम चिंता मत करो।

(घंटी बजती है)

कालियायेव : वह देखो।

(वाइनोव दाखिल होता है)

अन्नेकोव : क्या तुम सो पाए?

वोइनोव : हाँ, थोड़ा सा।

अन्नेकोव : क्या तुम पूरी रात सोए रहे?

वोइनोव : नहीं।

स्तेपान : यह जरूरी है, इसकी तरकीब है।

वोइनोव : मैंने कोशिश की पर बहुत थका हुआ था।

अन्नेकोव : तुम्हारा हाथ काँप रहा है।

वोइनोव : नहीं तो! *(सभी उसकी ओर देखते हैं)* तुम मुझे ऐसे क्यों देख रहे हो? क्या हम थक भी नहीं सकते?

अन्नेकोव : हाँ, कोई थक क्यों नहीं सकता। हम तुम्हारे बारे में सोच रहे थे।

वोइनोव : *(कुछ आवेश में)* यह तो पहले सोचना था। अगर बम फेंका गया होता तो दो दिन की फुरसत हो जाती फिर हमारे थकने की नौबत ही नहीं आती।

कालियायेव : अलेक्सी, मुझे माफ करना। मैंने स्थिति को ज्यादा मुश्किल बना दिया है।

वोइनोव : *(बहुत धीमी आवाज में)* ऐसा किसने कहा? अधिक मुश्किल क्यों? मैं थक गया हूँ, बस बात इतनी ही है।

दोरा : अब सब कुछ जल्दी ही हो जाएगा। एक घंटे में सब कुछ खतम हो

जाएगा।

वोइनोव : हाँ, हाँ, घंटे भर में सब कुछ खतम हो जाएगा।

(वह अपने चारों ओर निगाह दौड़ाता है; दोरा उसकी ओर आती है और उसका हाथ थाम लेती है; वह हाथ पकड़ने देता है और फिर झटके से छुड़ा लेता है)

वोइनोव : बोरिया, मैं तुमसे बात करना चाहता हूँ।

अन्नेकोव : अकेले में?

(कालियायेव, स्तेपान और दोरा उन्हें देखते हुए बाहर जाते हैं)

अन्नेकोव : कहो क्या है? *(वोइनोव चुप है)* तुमसे प्रार्थना है बोलो।

वोइनोव : मैं शर्मिंदा हूँ, तुम्हें सब कुछ सच-सच बताना जरूरी है।

अन्नेकोव : तुम बम फेंकना नहीं चाहते?

वोइनोव : मैं फेंकने में असमर्थ हूँ।

अन्नेकोव : क्या तुम्हें डर है? क्या इतनी ही ब्रात है? इसमें शर्म की कोई बात नहीं।

वोइनोव : मुझे डर है और इस डर के लिए शर्म है।

अन्नेकोव : लेकिन कल के पहले तो तुम खुश और भयमुक्त थे। जब तुम गए तुम्हारी आँखों में चमक थी।

वोइनोव : दरअसल डर मुझे हमेशा था। मैंने अपने में साहस बटोर लिया था, बात इतनी ही थी। जब मैंने दूर से बग्घी के चक्के की आवाज सुनी तो अपने से कहा 'चलो बस मिनट भर की बात है', मैंने दाँत भींच लिए। मेरी सभी माँसपेशियाँ तन गईं। मैं इतनी शक्ति से बम प्रहार करनेवाला था कि ग्रैंड ड्यूक को प्रहार के धक्के से ही मार डालना हो। मैं पहले धमाके के इंतजार में था ताकि मैं अपनी सारी संचित सभी शक्ति को झोंक सकूँ, लेकिन कुछ भी नहीं होता। बग्घी मुझ तक आती है और अपनी तेज गति के कारण तुरंत मुझे छोड़ निकल जाती है। तब मुझे लगता है यानेक ने बम नहीं फेंका। इसी क्षण एक भयावह गर्द मुझ पर छा गई और अचानक मैं बहुत ही कमजोर, एक नन्हें बच्चे की तरह महसूस करने लगा।

अन्नेकोव : यह कुछ भी नहीं है। अलेक्सी, जीवन की गति फिर लौट आएगी।

वोइनोव : दो दिनों से तो जीवन फिर लौट नहीं पाया। मैं लगातार तुमसे झूठ बोल रहा था, मैं रातभर सो नहीं पाया। मेरा दिल जोर से धड़क रहा था। आह! बोरिया मैं बेचैन हूँ।

अन्नेकोव : तुम्हें नहीं होना चाहिए। हम सब एक समय तुम जैसे ही थे। तुम बम नहीं फेंकोगे। फिनलैंड में एक महीने के विश्राम के बाद तुम फिर हम लोगों के बीच आ जाओगे।

वोइनोव : नहीं, बात दूसरी है। अगर मैं आज बम नहीं फेंकता हूँ तो फिर कभी बम नहीं फेंक पाऊँगा।

अन्नेकोव : फिर?

वोइनोव : मैं आतंकवादी हरकतों के लायक नहीं हूँ। अब मैं इसे समझ गया हूँ। अच्छा यही है कि मैं तुम लोगों से अलग हो जाऊँ। मैं कमेटी में प्रचार कार्य का जिम्मा ले सकता हूँ।

अन्नेकोव : खतरा तो वहाँ भी उतना ही है।

वोइनोव : हाँ, लेकिन वहाँ आँख बंद कर सब कुछ किया जा सकता है। सभी बातें अज्ञात रहती हैं।

अन्नेकोव : तुम क्या कहना चाहते हो?

वोइनोव : *(गर्म होकर)* अंजाम का पता नहीं रहता है। बैठकों में शामिल होना, स्थितियों का जायजा लेना और फिर मृत्युदंड का फरमान जारी करना यह सब आसान है। जान की जोखिम तो निश्चित रूप से रहती है लेकिन सब कुछ अनदेखा रहता है। इसके विपरीत जब शहर पर अंधेरा पसर रहा हो, गर्म भोजन के लिए तेज कदमों से जाते हुए लोगों की भीड़ के बीच महिलाओं और बच्चों की उष्माभरी उपस्थिति में चुपचाप खड़ा होना, हाथ में वजनी बम और यह खयाल कि तीन मिनट में, दो मिनट में, कुछ सेकेंड में हम लपक कर एक चमकदार बग्घी के सामने होंगे, यही आतंकित करता है। अब मुझे अहसास है कि दुबारा यह काम करने में मेरे होश व हवास गुम हो जाएँगे। हाँ, मैं शर्मिंदा हूँ। मैंने अपनी निगाह बहुत ऊँची कर रखी थी। उचित यही है कि मैं अपनी हैसियत के हिसाब से काम करूँ। एक बहुत छोटी जगह पर, जिसके लायक मैं हूँ।

अन्नेकोव : कहीं कोई छोटी जगह नहीं है। जेल और फाँसी का फंदा सदा सामने है।

वोइनोव : लेकिन इन्हें तो हम वैसे प्रत्यक्ष नहीं देखते जैसा उन्हें जिनकी हम हत्या करते हैं। सौभाग्य से मुझमें कल्पनाशक्ति का अभाव है। *(वह घबड़ाहट में हँसता है)* दरअसल मुझे पुलिस के खुफिया विभाग की उपस्थिति पर कभी विश्वास नहीं हुआ। एक आतंकवादी के लिए विलक्षण बात है न? पेट में पहली लात लगने पर विश्वास कर पाऊँगा। उसके पहले नहीं।

अन्नेकोव : और एक बार कारावास जाने पर? देखना और जानना दोनों होता है। वहाँ कुछ भी विस्मृत होनेवाला नहीं है।

वोइनोव : कारागार में कोई निर्णय नहीं लेना पड़ता है। हाँ, यही बात है। आगे कोई निर्णय नहीं लेना। यह कहने की नौबत नहीं चलो, तुम्हीं पर निर्भर है कि तुम दूसरे होगे या तुम कूद कर आगे जाओगे। यह तय है कि अगर मैं गिरफ्तार हुआ तो भागने की कोशिश नहीं करूँगा। भागने के लिए फिर भी तरकीब की जरूरत होती है, अभिक्रम करना होता है। अगर नहीं भागता है तो दूसरे लोगों को अभिक्रम की निगरानी करनी होती है। उन्हें ही परिश्रम करना होता है।

अन्नेकोव : कभी-कभी तुम्हें फाँसी पर लटकाने का परिश्रम भी।

वोइनोव : *(हताशा के स्वर में)* कभी-कभी, लेकिन मेरे लिए मर जाना कहीं आसान है बनिस्बत अपनी हथेली में दूसरे की और अपनी जान को रखना और उस घड़ी का फैसला करना कि कब दोनों को ज्वाला के हवाले कर दिया जाए। नहीं बोरिया, मेरे लिए उबरने का एकमात्र मार्ग यह है कि जो मैं हूँ उस हकीकत को कबूल कर लूँ। *(अन्नेकोव चुप रहता है)* कायर भी क्रांति में मदद कर सकते हैं। यह काफी है कि वे अपनी जगह कबूल कर लें।

अन्नेकोव : हम सभी में कायरता है। लेकिन हमें सदा इसे जाँचने का मौका नहीं मिलता। तुम वही करो जो चाहते हो।

वोइनोव : मैं सोचता हूँ कि मुझे इसी समय विदा हो जाना चाहिए। मैं बाकी लोगों का सामना नहीं कर सकता, लेकिन तुम उन्हें बतला देना।

अन्नेकोव : मैं, उन्हें बतला दूँगा। *(वह उसकी ओर बढ़ता है)*

वोइनोव : यानेक से बोल देना कि गलती उसकी नहीं थी और मैं उससे प्यार करता हूँ जैसा तुम सबसे।

(चुप्पी, अन्नेकोव उसे गले लगाता है)

अन्नेकोव : अलविदा साथी। सबका अंजाम होगा। रूस में आनंद छाएगा।

वोइनोव : *(भागते हुए)* हाँ, वह आनंदित हो। वह आनंदित हो।

(अन्नेकोव दरवाजे पर जाता है)

अन्नेकोव : आओ। *(दोरा के साथ सभी अंदर आते हैं)*

स्तेपान : क्या बात थी?

अन्नेकोव : वोइनोव बम नहीं फेंकेगा। वह थक गया है। उसे अपने पर भरोसा नहीं है।

कालियायेव : भूल मेरी है, है न बोरिया?

अन्नेकोव : उसने यह कहने को कहा है कि वह तुमसे प्यार करता है।

कालियायेव : वह हम लोगों की इज्जत करता है?

अन्नेकोव : शायद। फिलहाल तो वह हमसे जुदा हो गया है।

स्तेपान : क्यों?

अन्नेकोव : वह कमेटी में ज्यादा उपयोगी होगा।

स्तेपान : क्या यह उसकी इच्छा है, यानी वह भयभीत है?

अन्नेकोव : नहीं, सारे निर्णय मेरे हैं।

स्तेपान : निर्णायक कार्रवाई के एक घंटे पहले तुम कर्ता को हटा देते हो।

अन्नेकोव : निर्णायक वक्त के घंटे भर पहले मुझे निर्णय अकेले ही लेना होता है। उस समय बहस के लिए समय नहीं होता। मैं वोइनोव की जगह लूँगा।

स्तेपान : यह तो मेरा हक बनता है।

कालियायेव : *(अन्नेकोव से)* तुम प्रधान हो। तुम्हारा कर्तव्य यहाँ बन रहना है।

अन्नेकोव : प्रधान को मुक्त रहने का कर्तव्य होता है बशर्ते वह समय पड़ने पर अपनी निष्ठा सिद्ध करे। मेरा फैसला हो चुका है। स्तेपान, जब तक जरूरी हो तुम मेरी जगह पर रहोगे। आओ, तुम आदेशों को समझ लो।

(सभी चले जाते हैं; कालियायेव बैठ जाता है; दोरा उसके पास आती है और हाथ बढ़ाती है; फिर समेट लेती है)

दोरा : इसमें तुम्हारी कोई गलती नहीं है।

कालियायेव : मैंने उसे दुखी किया है, बहुत दुखी। तुम्हें पता है कि उसने उस दिन क्या कहा था?

दोरा : वह तो बार-बार यही कह रहा था कि वह खुश है।

कालियायेव : हाँ, उसने मुझे यह भी कहा कि हमारे समुदाय के बाहर उसके लिए कहीं खुशी नहीं है। उसने कहा हमारे लिए बस संगठन है और इसके बाहर कुछ नहीं है। यह एक तरह का भातृत्व बंधन है। दोरा कितना मार्मिक है यह सब।

दोरा : वह फिर वापस आएगा।

कालियायेव : नहीं, मेरा खयाल है कि उसकी जगह मैं होता तो बिलकुल हताश होता।

दोरा : क्या इस समय तुम नहीं हो?

कालियायेव : *(उदास भाव से)* अभी? मैं तुम लोगों के साथ हूँ और जितना संभव है खुश हूँ।

दोरा : *(धीमे स्वर से)* यह एक विलक्षण खुशी है।

कालियायेव : यह एक विलक्षण खुशी है। क्या तुम्हारा खयाल मेरे जैसा नहीं है?

दोरा : मैं तुम जैसा ही सोचती हूँ। लेकिन तुम उदास क्यों हो? दो दिन पहले तुम्हारे चेहरे पर चमक थी। लगता था तुम किसी बड़े उत्सव के लिए प्रस्थान कर रहे हो। आज...

कालियायेव : *(कालियायेव एक भारी अंतरद्वंद्व से ग्रस्त जान पड़ता है)* आज मैं वह समझ रहा हूँ जो पहले नहीं समझता था। तुम ठीक ही सोचती थी कि यह सब इतना सरल नहीं है। मेरा विश्वास था कि मार डालना आसान है, विचार काफी है और फिर साहस हो। लेकिन मुझमें वैसी महानता नहीं है और मैं अनुभव करता हूँ कि नफरत से सुकून नहीं आता। वे सारी बुराइयाँ, मेरे भीतर की और दूसरों की बनी रहती हैं। हत्या, कायरता, अन्याय...आदि सब। यह जरूरी है, यह जरूरी है कि मैं उसे मारूँ... लेकिन मुझे सीमा तक पहुँचना है। नफरत से परे दूर तक।

दोरा : बहुत दूर? वहाँ कुछ नहीं है।

कालियायेव : वहाँ प्यार है।

दोरा : प्यार? नहीं, जो होना चाहिए वह नहीं होता।

कालियायेव : ओफ !दोरा, तुम यह कैसे कह रही हो, तुम, जिसका दिल, मैं जानता हूँ...

दोरा : चारों ओर खून ही खून है, भीषण हत्या है। जिन्हें सचमुच न्याय से प्रेम है उन्हें प्यार करने का अधिकार नहीं। वे तन कर खड़े हैं जैसी मैं हूँ, सिर ऊँचा किए और दृष्टि एकाग्र किए। इन सख्त दिलों में प्यार के लिए जगह कहाँ है? प्यार नरम कर सिर को झुका देता है, यानेक। हम लोग सख्त गरदन वाले लोग हैं।

कालियायेव : लेकिन हम लोग अपनी जनता से प्यार करते हैं।

दोरा : हम लोग उनसे प्यार करते हैं, यह सच है। उनसे हमारा प्यार विराट है लेकिन बेसहारा, एक दुखद प्यार। हम उनसे दूर रहते हैं, अपने कमरों में बंद, अपने विचारों में खोए। और जनता, क्या उसे भी हमसे प्यार है? जनता चुप रहती है। आह, कैसी चुप्पी, कैसी चुप्पी...

कालियायेव : यही तो प्यार है, सब कुछ दे देना, सब कुछ कुरबान कर देना है, बदले में बिना कुछ पाने की उम्मीद के।

दोरा : शायद ! यह आत्यंतिक प्यार है, शुद्ध और एकाकी प्यार, दरअसल यही

है जो मुझे जला रहा है। फिर भी कभी-कभी किसी-किसी घड़ी में मैं सोचती हूँ कि प्यार कहीं कुछ दूसरा तो नहीं है जहाँ सिर्फ एकालाप ही नहीं रहे और प्रत्युत्तर भी हो। मैं इसकी कल्पना क्यों करती हूँ। सोचो — सूरज का प्रकाश, विनम्रता से झुका सिर, घमंड से मुक्त हृदय, फैली हुई बाँहें। ओह, यानेक, चाहे घंटे भर के लिए ही सही अगर हम संसार के दुखों को भूल कर मुक्त हो पाते। आत्मपरकता की एक छोटी घड़ी, क्या तुम इसकी कल्पना कर पाते हो?

कालियायेव : हाँ दोरा, इसे कोमलता कहते हैं।

दोरा : प्यारे दोस्त तुम ठीक समझते हो, इसे कोमलता कहते हैं। लेकिन क्या तुम इसे ठीक-ठीक जानते हो? क्या तुम न्याय से कोमल भाव से प्यार करते हो? *(कालियायेव चुप रहता है)* क्या तुम हमारी जनता से इसी उन्मुक्तता और कोमलता से प्यार करते हो या इसके विपरीत बदले की भावना, विद्रोह और बगावत की ज्वाला से? *(कालियायेव लगातार चुप रहता है)* देखो, *(वह उसके पास आती है और क्षीण स्वर में बोलती है)* और मैं, मैं तुमसे कोमलता से प्यार करती हूँ।

(कालियायेव उसकी ओर देखता है)

कालियायेव : *(थोड़ी देर की चुप्पी के बाद)* कोई भी तुमसे उतना प्रेम नहीं करेगा जितना मैं करता हूँ।

दोरा : मैं जानती हूँ। पर क्या हम सारी दुनिया की तरह बेहतर ढंग से प्यार नहीं कर सकते?

कालियायेव : मैं जो कुछ भी होऊँ, मैं जैसा हूँ वैसा ही तुमसे प्यार करता हूँ।

दोरा : क्या तुम मुझसे न्याय से ज्यादा, संगठन से ज्यादा प्यार करते हो?

कालियायेव : मैं तुम्हें संगठन और न्याय से अलग करके नहीं देखता।

दोरा : हाँ, पर मेरे सवाल का ठीक-ठीक जवाब दो, मेरी आरजू है। क्या तुम्हारा प्यार एकांतिक है, क्या इसमें कोमलता है, क्या इसमें अहं भाव है? क्या तुम मुझसे तब भी प्यार करोगे जब मैं अन्यायी होऊँ?

कालियायेव : अगर तुम अन्यायी होओगी और अगर मैं तुमसे प्यार कर सकूँगा, तब मेरा प्यार, जो तुम हो उससे नहीं होगा।

दोरा : तुम जवाब से कतरा रहे हो। क्या तुम मुझसे तब भी प्यार करते अगर मैं संगठन में नहीं होती?

कालियायेव : तब तुम कहाँ होती?

दोरा : मेरी स्मृति में वे दिन हैं जब मैं पढ़ती थी। मैं हँसोड़ थी। तब मैं सुंदर थी। मैं अपना समय घूमने और सपने देखने में बिताती थी। क्या तुम इस अगंभीर और लापरवाह व्यक्ति से भी प्यार करते?

कालियायेव : *(झिझक के साथ कुछ रुक कर)* मैं तुमसे 'हाँ' कहने की इच्छा से मर रहा हूँ।

दोरा : *(चिल्लाहट के स्वर में)* फिर मेरे प्यारे, हाँ कह दो, अगर तुम ऐसा सोचते हो और अगर यह सच्चाई है। न्याय के बरक्स, दुखों और बंधन में जकड़ी मानवता के बावजूद। हाँ, हाँ मेरी तुमसे आरजू है, बच्चों की पीड़ा के बावजूद लोगों के फाँसी पर लटकाए जाने के बावजूद और इसके बावजूद कि लोगों को चाबुकों की मार से मार डाला जा रहा है...

कालियायेव : शांत रहो दोरा।

दोरा : नहीं कम से कम एक बार तो दिल की बोलने की इजाजत होनी चाहिए। मैं इंतजार में हूँ कि तुम मुझे, दोरा को, पुकारो, तुम मुझे अन्याय से विषाक्त इस दुनिया से परे हो पुकारो...

कालियायेव : *(निर्मम भाव से)* और मत बोलो! मेरा दिल सिर्फ तुम्हारी बात करता है। लेकिन इसी ऐन मौके पर मुझे काँपना नहीं चाहिए।

दोरा : *(अन्यमनस्क भाव से)* इसी समय? हाँ, मैं भूल गई...*(वह हँसती है मानो रो रही हो)*नहीं, बिलकुल ठीक है मेरे प्यारे, झुंझलाओं नहीं, मेरी नासमझी थी। थकान का असर था। नहीं, मुझे यह सब नहीं करना चाहिए था। तुमसे मेरा प्यार भी वैसा ही मर्यादित है न्याय और कैद की बंदिशों से। ग्रीष्म, तुम्हें याद है यानेक? नहीं-नहीं, यह तो अंतहीन हिमयुग है। हम लोग इस दुनिया के निवासी नहीं, हम तो न्यायकर्ता हैं। वह उष्णता हम लोगों के लिए नहीं है। *(वह दूसरी ओर मुँह कर लेती है)* कितने दयनीय हैं न्यायकर्ता!

कालियायेव : *(हताशा के भाव से उसे निहारता हुआ)* हाँ, यही हमारी नियति है, प्यार असंभव है। हाँ, मैं ग्रैंड ड्यूक की हत्या करूँगा और यह एक तरह की शांति होगी तुम्हारे लिए और मेरे लिए।

दोरा : शांति, वह हम कब पाएँगे?

कालियायेव : *(उत्तेजना के साथ)* कल।

(अन्नेकोव और स्तेपान प्रवेश करते हैं; दोरा और कालियायेव एक दूसरे से अलग होते हैं)

अन्नेकोव : यानेक।

कालियायेव : इसी पल *(वह पसीने से तर है)* आखिरकार, आखिरकार।

स्तेपान : *(उसकी ओर बढ़ते हुए)* अलविदा साथी, हम तुम्हारे साथ हैं।

कालियायेव : अलविदा! स्तेपान *(वह दोरा की ओर मुड़ता है)* अलविदा दोरा।

(दोरा उसकी ओर आती है; वे एक दूसरे से बिलकुल करीब हैं लेकिन एक दूसरे को स्पर्श नहीं करते)

दोरा : अलविदा नहीं, फिर मिलेंगे। फिर मिलेंगे मेरे प्यारे, हम फिर एक दूसरे को पाएँगे।

(चुप्पी)

कालियायेव : अलविदा *(फ्रांसीसी भाषा में ओरिव्वा अलविदा के लिए आता है जिसका अर्थ फिर मिलना होता है)* रूस खुशहाल होगा।

दोरा : *(आँखों में आँसू आ जाते हैं)* रूस खुशहाल होगा।

(कालियायेव ईश मूर्ति को नमन करता है; वह अन्नेकोव के साथ बाहर जाता है; स्तेपान खिड़की पर जाता है; दोरा हिलती नहीं अनिमेष दरवाजे की ओर देखती है)

स्तेपान : वह कितनी निर्भीक चाल से चल रहा था। यह मेरी भूल थी कि मैं यानेक पर गर्व नहीं करता था। मुझे उसकी आस्था और उत्साह से प्रेम नहीं था। उसने क्रास का चिन्ह बनाया,तुमने देखा? क्या वह आस्तिक है?

दोरा : वह कर्मकांडों का पालन नहीं करता।

स्तेपान : फिर भी उसकी आत्मा धार्मिक है। यही चीज है जो हम दोनों को अलग करती है। मैं उसकी तुलना में बहुत कठोर हूँ, यह मैं अच्छी तरह समझता हूँ। हमारे लिए, जो अनीश्वरवादी हैं, न्याय की स्थापना जरूरी है नहीं तो सिर्फ निराशा ही निराशा है।

दोरा : उसके लिए न्याय स्वयं निराश करनेवाला है।

स्तेपान : हाँ, एक कोमल आत्मा। पर उसके हाथ मजबूत हैं। वह आत्मा से ज्यादा महत्व का है। वह उसे मारेगा यह निश्चित है। यह अच्छी बात है, बहुत अच्छी बात है। विध्वंस करना, यही जरूरी है। लेकिन तुम कुछ नहीं बोल रही। *(वह उसकी ओर प्रश्नभरी दृष्टि से देखता है)* तुम उससे प्रेम करती हो?

दोरा : प्रेम करने के लिए समय की जरूरत होती है। हमें तो न्याय के लिए भी मुश्किल से यथेष्ट समय मिल पाता है।

स्तेपान : तुम सही हो। बहुत कुछ करना है, इस संसार को नीचे से ऊपर तक नष्ट कर डालना है... फिर... *(खिड़की पर नजर डालता है)* वे दिखाई नहीं दे रहे हैं, वे पहुँच चुके हैं।

दोरा : इसके बाद...

स्तेपान : तब हम एक दूसरे से प्यार करेंगे।

दोरा : हाँ, अगर हम बचे रहेंगे।

स्तेपान : तो दूसरे प्यार करेंगे, बात एक ही है।

दोरा : स्तेपान जरा 'नफरत' बोलो तो।

स्तेपान : कैसे?

दोरा : 'नफरत' शब्द का उच्चारण तो करो।

स्तेपान : नफरत।

दोरा : बिलकुल ठीक है। यानेक इस शब्द का उच्चारण नहीं कर पाता था।

स्तेपान : *(थोड़ी चुप्पी के बाद उसकी ओर आता हुआ)* मैं समझता हूँ कि तुम्हें मुझसे हिकारत है। लेकिन क्या तुम आश्वस्त हो कि तुम्हारी धारणा सही है? *(चुप्पी; फिर बढ़ती उत्तेजना के साथ)* तुम लोग जो कुछ करते हो उसका खूब प्रसार-प्रचार करते हो, उस हेय प्यार के नाम पर। लेकिन मैं किसी से प्यार नहीं करता, दरअसल मैं अपने मानव समुदाय से नफरत करता हूँ। मेरा उनके प्यार से कैसा नाता? मैंने उन्हें कैदखाने के पूरे तीन वर्षों में जाना है। ये तीन साल मुझ पर चस्पाँ हैं। तुम चाहती हो कि मैं भावुक बनूँ और बम को एक सलीब की तरह ढोऊँ? नहीं-नहीं मैं बहुत दूर जा चुका हूँ... मैंने बहुत कुछ जाना है... देखो... *(वह अपनी कमीज फाड़ डालता है; दोरा उसकी ओर नजर डालती है; चाबुक के निशानों को देख पीछे हट जाती है)* यह निशानी है। उनके प्रेम की निशानी। क्या अभी भी तुम्हें मुझसे हिकारत है?

(दोरा उसके पास आती है और उसे छाती से लगा लेती है)

दोरा : दुख दर्द से किसे हिकारत हो सकती है? मुझे तुमसे भी प्यार है।

स्तेपान : *(वह उसकी ओर देखता है और भर्राई आवाज में कहता है)* मुझे माफ करो, दोरा *(कुछ रुक कर वह मुड़ता है)* शायद यह थकावट है। संघर्ष के वर्ष, दुश्चिंताएँ, जासूस, कैद आखिर में यह *(वह निशान दिखलाता है)* मुझमें प्यार करने की शक्ति कहाँ बचती? सिर्फ मेरे पास नफरत की ताकत बची रही। बिलकुल चेतनाशून्य होने से यह तो बेहतर है।

दोरा : हाँ, वह बेहतर है।

(वह उसकी ओर देखती है; सात की घंटी बजती है)

स्तेपान : *(अचानक घूमता है)* अब ग्रैंड ड्यूक आएगा।

(दोरा खिड़की के पास जाती है और उसके शीशे से चिपक जाती है; लंबी चुप्पी। दूर से बग्घी की आवाज आती है; बग्घी पास आती है और फाटक से गुजर जाती है)

स्तेपान : वह अकेला है ...

(बग्घी के फाटक से गुजरने के साथ; एक भयंकर विस्फोट; दोरा हाथों में सिर थामे जोर से चौंक उठती है; लंबी खामोशी)

स्तेपान : बोरिया ने बम नहीं फेंका। यानेक कामयाब हुआ। जनता जिंदाबाद। यह आनंद की घड़ी है।

दोरा : *(आँसू भरी आँखों के साथ स्तेपान का सहारा लेती है)* हम लोगों ने उसे मारा है। हम लोग ही हैं जिन्होंने उसे मारा है। मैंने मारा है।

स्तेपान : *(चिल्ला कर)* हमने किसे मारा? यानेक को?

दोरा : ग्रैंड ड्यूक को।

(परदा गिरता है)

दृश्य : चार

(बुतिर्की कारा के पुगाचेव टावर का एक सेल; समय : प्रातःकाल, जब परदा उठता है कालियायेव सेल में उठता है और दरवाजे को देखता है; एक प्रहरी एक कैदी के साथ जिसके हाथ में एक बालटी है प्रवेश करता है)

प्रहरी : साफ-सफाई करो। फुरती से करो।

(वह खिड़की के पास खड़ा होता है; फोका नाम का कैदी कालियायेव की तरफ देखे बिना साफ-सफाई शुरू करता है; चुप्पी)

कालियायेव : मित्र, तुम्हारा नाम क्या है?

फोका : फोका।

कालियायेव : क्या तुम सजायाफ्ता हो?

फोका : ऐसा ही लगता है।

कालियायेव : तुमने क्या किया?

फोका : मैंने हत्या की।

कालियायेव : क्या तुम भूखे थे?

प्रहरी : धीरे बोलो।

कालियायेव : क्यों?

प्रहरी : *(धीमी आवाज में)* हम तुम्हें नियम के विरुद्ध बात करने दे रहे हैं। इसलिए धीरे बोलो। पुराने रिवाज के मुताबिक चलना होगा।

कालियायेव : क्या तुम भूखे थे?

फोका : नहीं, मैं प्यासा था।

कालियायेव : फिर?

फोका : मेरे पास एक कुल्हाड़ी थी। मैंने सब कुछ तोड़ डाला। मैंने शायद तीन लोगों की हत्या कर दी।

(कालियायेव उसकी ओर देखता है)

फोका : हुजूर आप रईस हैं, मुझे मित्र मत कहिए।

कालियायेव : मैंने भी हत्या की है।

फोका : कितनी?

कालियायेव : अगर तुम चाहते हो तो मैं तुम्हें बता दूँगा। लेकिन मेरे सवाल का जवाब दो। तुम्हें अपने किए पर पछतावा है, है न?

फोका : जरूर, बीस साल की कैद, यह बड़ी तकलीफदेह है। इस बात से पछतावा होता है।

कालियायेव : बीस वर्ष। यानी मैं यहाँ तेईस वर्ष की उम्र में दाखिल होऊँगा और जब निकलूँगा तो सारे बाल सफेद हो चुके होंगे।

फोका : ओह, शायद आपके लिए यह आसान हो। जजों के ऊपर और नीचे भी दूसरे अधिकारी होते हैं। यह निर्भर करता है कि वे शादीशुदा हैं और हैं तो किससे उनकी शादी हुई है। और फिर आप रईस हैं। बेचारे गरीबों को ही असली कीमत चुकानी होती है। आप कोई रास्ता निकाल ही लेंगे।

कालियायेव : मेरा ऐसा विश्वास नहीं है और ना ही ऐसी मेरी इच्छा है। मैं बीस साल तक यह शरमिंदगी बर्दाश्त नहीं कर सकता।

फोका : शरमिंदगी! कैसी शरमिंदगी? आखिरकार यह भी रईस लोगों का ही विचार है। आपने कितने लोगों की हत्या की है?

कालियायेव : सिर्फ एक की।

फोका : कैसी बात करते हैं? यह तो कुछ भी नहीं है।

कालियायेव : मैंने ग्रैंड ड्यूक सर्ज की हत्या की है।

फोका : ग्रैंड ड्यूक? ओह! आपने यह कैसे किया? क्या आपने इस सामंत को देखा? यह गंभीर मामला है। मुझे बताइए।

कालियायेव : मामला गंभीर है, लेकिन हत्या करना जरूरी था।

फोका : क्यों, क्या आप दरबार में रहते थे? क्या किसी औरत का मामला था, नहीं?

कालियायेव : मैं सोशलिस्ट हूँ।

प्रहरी : तेज आवाज नहीं।

कालियायेव : *(और जोर से)* मैं सोशलिस्ट रिवोल्युशनरी हूँ।

फोका : तो इसके पीछे एक इतिहास है और आपको सोशलिस्ट बनने की क्या जरूरत थी। आप केवल शांत रहते और सब कुछ ठीक-ठाक चलता। धरती रईसों के लिए बनी है।

कालियायेव : नहीं, यह तुम्हारे लिए बनी है। दुनिया तकलीफों और अपराधों से भर गई है। जब तकलीफें कम हो जाएँगी तो अपराध भी कम हो जाएँगे। अगर धरती आजाद हो जाएगी तो तुम जहाँ हो वहाँ नहीं होओगे।

फोका : हाँ भी और नहीं भी। आजादी हो या नहीं। जरूरत से ज्यादा एक प्याला पीना कभी भी अच्छा नहीं होता।

कालियायेव : यह कभी भी अच्छा नहीं होता। लेकिन लोग पीते हैं क्योंकि अपमानित होते हैं। एक समय आएगा जब पीना बेमतलब हो जाएगा, जहाँ कोई भी शरमिंदा नहीं होगा, न अमीर होगा न गरीब। हम सब दोस्त होंगे और न्याय हमारे दिलों को पारदर्शी बना देगा। क्या तुम मेरी बात समझ रहे हो।

फोका : हाँ, यह ईश्वर का राज होगा।

प्रहरी : धीरे बोलो।

कालियायेव : यह कहना सही नहीं है, मित्र। ईश्वर कुछ नहीं कर सकता। न्याय हमारा सरोकार है। *(चुप्पी)* तुम समझ नहीं रहे हो? क्या तुम्हें संत दिमित्री की कथा मालूम है?

फोका : नहीं।

कालियायेव : उन्हें स्टेप्पी के मैदान में स्वयं ईश्वर से साक्षात्कार के लिए जाना था। लेकिन रास्ते में उन्हें एक किसान मिला, जिसकी गाड़ी दलदल में फँस गई थी। दिमित्री उसकी मदद में लग गए। कीचड़ गाढ़ा था और दलदल

एकदम नीचे तक थी। उन्हें घंटे भर मशक्कत करनी पड़ी। जब काम खत्म हो गया तब दिमित्री साक्षात्कार के लिए दौड़े गए। लेकिन तब तक ईश्वर चले गए थे।

फोका : मतलब?

कालियायेव : मतलब बहुत ऐसे लोग हैं जो साक्षात्कार का मौका गँवा देते हैं क्योंकि उन्हें अनेक गाड़ियों को दलदल से निकालना और अनेकों को बचाना होता है।

(फोका झुक जाता है)

कालियायेव : क्या बात है?

प्रहरी : *(फोका से)* बूढ़े, जल्दी करो और धीरे बोलो।

फोका : मुझे खुद पर संदेह होता है। यह सब सामान्य नहीं है। कोई जेल में संत और गाड़ी की कहानी सुनने नहीं आता। इसके अलावा दूसरी चीजें भी हैं...

(प्रहरी हँसता है)

कालियायेव : *(उसकी ओर देखता है)* और क्या?

फोका : जो ग्रैंड ड्यूक की हत्या करता है उसे वे क्या सजा देते हैं?

कालियायेव : उसे वे फाँसी पर लटका देते हैं।

फोका : ओह।

(वह जाने लगता है और प्रहरी ज्यादा जोर से हँसता है)

कालियायेव : रुको। मैंने ऐसा क्या किया है कि तुम जा रहे हो?

फोका : आपने कुछ भी नहीं किया है। भले ही आप पूरे रईस हैं फिर भी मैं आपको धोखा देना नहीं चाहता। गपशप कर वक्त गुजारना और बात है लेकिन आपको फाँसी देना तो अच्छी बात नहीं है।

कालियायेव : क्यों?

प्रहरी : (हँसते हुए) बूढ़े, बोलो न... चुप क्यों हो गए?

फोका : आप मुझसे मित्र की तरह बात नहीं कर सकते क्योंकि दरअसल मृत्युदंड पानेवालों को मैं ही फाँसी पर लटकाता हूँ।

कालियायेव : क्या तुम भी सजायाफ्ता नहीं हो?

फोका : बिलकुल ठीक। उन्होंने सुझाव दिया है कि मैं यह काम करूँ और हर फाँसी के लिए वे मेरी सजा साल भर कम कर देंगे। यह अच्छा सौदा है।

कालियायेव : वे तुमसे तुम्हारे गुनाहों से मुक्त करने के लिए दूसरा गुनाह करवाते हैं।

फोका : यह अपराध नहीं हुआ क्योंकि यह आज्ञा पालन है। और फिर उनके लिए कोई फरक नहीं पड़ता। अगर तुम मेरी राय चाहते हो तो मैं यह कहूँगा कि वे ईसाई नहीं हैं।

कालियायेव : अब तक कुल कितनी बार चढ़ा चुके हो?

फोका : दो बार।

(कालियायेव सिहर उठता है; प्रहरी फोका को धकियाता है)

कालियायेव : यानी तुम जल्लाद हो?

फोका : *(दरवाजे से)* ठीक है रईस, और आप?

(वह बाहर जाता है; कदमों की आवाज और हुक्म सुनाई पड़ता है; प्रहरी के साथ सजे-धजे लिबास में स्कूरातोव आता है)

स्कूरातोव : गुड मार्निंग। तुम मुझे नहीं पहचानते? मैं तुम्हें पहचानता हूँ। *(वह हँसता है)* अभी से ही प्रसिद्धि। क्या मैं अपने को तुम्हारे सामने हाजिर कर सकता हूँ? *(कालियायेव कुछ नहीं बोलता)* तुम कुछ बोलते नहीं? मैं समझता हूँ। अकेलापन? क्यों? यह काफी कठिन है आठ दिन का अकेलापन। आज हम लोगों ने तुम्हारा अकेलापन खत्म कर दिया है और भी मुलाकाती आएँगे। मैं विशेषकर इसी में लगा हूँ। मैंने पहले ही तुम्हारे यहाँ फोका को भेजा था। वह विलक्षण है न? मैंने सोचा कि वह तुम्हें दिलचस्प लगेगा। क्या तुम संतुष्ट हो? आठ दिन के बाद कोई चेहरा देखना अच्छा लगता है न?

कालियायेव : यह चेहरे पर निर्भर करता है?

स्कूरातोव : सही बात उचित स्थान पर। तुम क्या चाहते हो वह जानते हो। *(कुछ अंतराल)* अगर मैंने ठीक समझा है तो इसका मतलब यह है कि मेरा चेहरा तुम्हें नापसंद है।

कालियायेव : हाँ।

स्कूरातोव : तुम्हें मुझसे निराशा हुई। लेकिन इसके पीछे गलतफहमी है। प्रारंभ में हकीकत जानना अक्सर तकलीफदेह होता है। अंदरूनी रूप में कोई भी पसंद के लायक नहीं होता। इसके अलावा तुम मुझे जानते भी नहीं। कभी-कभी कोई चेहरा विकर्षित करता है। फिर भी, अगर आदमी दिल को पहचाने...

कालियायेव : बहुत हुआ, तुम हो कौन?

स्कूरातोव : स्कूरातोव, पुलिस विभाग का निदेशक।

कालियायेव : एक चाकर।

स्कूरातोव : हाँ तुम्हारी सेवा में। लेकिन तुम्हारी जगह पर मैं ऐसा अहंकार जाहिर नहीं करता। शायद तुम रास्ते पर आ जाओगे। लोग शुरू करते हैं न्याय की इच्छा से और अंत करते हैं पुलिस-व्यवस्था के गठन से। और आखिरी बात यह है कि सच्चाई मुझे भयभीत नहीं करती। मैं तुमसे साफ-साफ बात करूँगा। तुम मुझे दिलचस्प लगते हो और मैं तुम्हें माफी हासिल करने का रास्ता मुहैया करा दूँगा।

कालियायेव : कैसी माफी?

स्कूरातोव : कैसी माफी, क्या? मैं तुम्हारे लिए जीवनदान की व्यवस्था करूँगा।

कालियायेव : तुमसे यह याचना किसने की?

स्कूरातोव : मेरे प्यारे कोई जीवन की माँग नहीं करता। लोग इसे पाते हैं। क्या तुमने कभी किसी को माफी नहीं दी है? *(कुछ रुक कर)* ठीक से याद करो।

कालियायेव : मैं एकबारगी तुम्हारी किसी भी माफी से इनकार करता हूँ।

स्कूरातोव : कम से कम सुनो तो। भले ही ऐसा दिखे, लेकिन मैं तुम्हारा दुश्मन नहीं हूँ। मैं मानता हूँ कि तुम अपने सोच में सही हो। सिर्फ हत्या को छोड़ कर...

कालियायेव : मैं तुम्हें इस शब्द का व्यवहार करने से मना करता हूँ।

स्कूरातोव : *(उसे देखते हुए)* आह, स्नायु कमजोर होते हैं न, *(रुक कर)* मेरी इच्छा ईमानदारी से तुम्हारी सहायता करने की है।

कालियायेव : मेरी सहायता की? मैं जरूरी कीमत चुकाने के लिए तैयार हूँ। लेकिन मैं तुमसे किसी तरह का अपनापन बरदाश्त करने को तैयार नहीं। मुझे अकेला छोड़ दो।

स्कूरातोव : इलजाम, तुम्हारे ऊपर बोझ है?

कालियायेव : मैं एक युद्धबंदी हूँ, कोई अपराधी नहीं।

स्कूरातोव : यह तो तुम सोचते हो। ग्रैंड ड्यूक और उसकी राजनीति को भला दरकिनार भी कर दें लेकिन एक आदमी की मौत से कैसे इनकार कर सकते हो? और मौत भी कैसी? खौफनाक मौत।

कालियायेव : मैंने बम तुम्हारी जुल्मी व्यवस्था पर फेंका था, एक व्यक्ति पर नहीं।

स्कूरातोव : निसंदेह। लेकिन बम का निशाना एक इंसान बना और वह चिथड़े-चिथड़े हो गया। प्यारे दोस्त तुमने देखा जब लोगों ने इधर-उधर छिटके

अंगों को समेट कर लाश को इकट्ठा किया तो सिर नदारद था। बाकी अंगों में सिर्फ एक हाथ और जाँघ का हिस्सा पहचाना जा सकता था।

कालियायेव : मैंने एक फैसले को अंजाम दिया था।

स्कूरातोव : शायद, शायद। तुम्हारे फैसले से कोई शिकायत नहीं है। लेकिन फैसला क्या होता है? यह एक शब्द है जिसके अर्थ पर कई रात बहस चल सकती है। तुमसे शिकायत यह है...नहीं, तुम इस शब्द को पसंद नहीं करोगे...कहें तो, एक अधकचरे व्यक्ति का अव्यवस्थित काम, जिसके नतीजे पर किसी बहस की गुंजाइश नहीं। वह सारे संसार की नजर के सामने है। ग्रैंड डचेस से पूछो। खून बहा है, समझे, काफी ज्यादा खून।

कालियायेव : तुम चुप रहो।

स्कूरातोव : ठीक है। मैं सिर्फ यही कहना चाहता हूँ कि अगर तुम इस फैसले के औचित्य की जिद पर अड़े हो कि यह पार्टी का निर्णय था और उसे अंजाम दिया गया और ग्रैंड ड्यूक को एक बम के बजाय एक विचार द्वारा मारा गया है, तब तुम्हें माफी की जरूरत नहीं। लेकिन यदि हम लोग साक्ष्यों पर नजर डाल कर मान लेते हैं कि तुमने ग्रैंड ड्यूक के सिर को उड़ा दिया तो सब कुछ बदल जाता है। है न? तब तो तुम्हें माफी की जरूरत होगी। मैं इसमें तुम्हारी सहायता करना चाहता हूँ सिर्फ सहानुभूतिवश, तो क्या विश्वास करोगे? *(वह हँसता है)* तुम क्या सोचते हो मेरी दिलचस्पी विचारों में नहीं व्यक्तियों में है।

कालियायेव : मेरा व्यक्तित्व तुमसे और तुम्हारे मालिकों से परे है। तुम मुझे मार सकते हो पर मेरे संबंध में फैसला नहीं कर सकते। मैं जानता हूँ कि तुम्हारे आने का मकसद क्या है। तुम मुझमें किसी कमजोर बिंदु की तलाश में हो और आशा करते हो कि मैं शरमिंदा होऊँ और आँसुओं से तर हो पश्चाताप करूँ। तुम्हें इसमें सफलता नहीं मिलेगी मैं क्या हूँ यह तुम्हारे मतलब की चीज नहीं है। जो तुम्हें मिलेगी वह है हमारी नफरत, हमारी और हमारे साथियों की और वह तुम्हारी सेवा में हाजिर है।

स्कूरातोव : नफरत? फिर एक विचार। लेकिन जो चीज ठोस है वह विचार नहीं, वह है हत्या और उसकी स्वाभाविक परिणति। मैं पश्चाताप और सजा की बात करना चाहता हूँ। और यही हकीकत के केंद्र में हैं। आखिरकार, मैं पुलिस में भरती क्यों हुआ? वस्तुओं के केंद्र में होने के लिए। लेकिन तुम्हें ये अंतरंग बातें पसंद नहीं। *(कुछ पल रुक कर वह धीरे से उसकी ओर बढ़ता है)* मैं कहना यह चाहता हूँ कि तुम्हें ऐसा नहीं लगना चाहिए कि तुमने ग्रैंड ड्यूक के माथे को झुका दिया। अगर तुम इस बात को ध्यान में रखोगे तो विचार तुम्हारे किसी काम नहीं आएगा। तुम्हें यही करना चाहिए। तभी जब तुम्हें शर्म आएगी और तुम क्षति की भरपाई के लिए जिंदा रहना चाहोगे। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि तुम जिंदा रहने का निर्णय करो।

कालियायेव : और अगर मैं यह निर्णय लूँ तो?

स्कूरातोव : तुम्हारे लिए और तुम्हारे साथियों के लिए माफी।

कालियायेव : क्या तुमने उन्हें गिरफ्तार कर लिया है।

स्कूरातोव : नहीं, फिलहाल नहीं। लेकिन अगर तुम जिंदा रहने का फैसला करो तो हम उन्हें गिरफ्तार कर लेंगे।

कालियायेव : क्या मैंने ठीक-ठीक समझा है?

स्कूरातोव : बिलकुल ठीक। गुस्सा मत करो। विचार करो। जहाँ तक सिद्धांत की बात है तुम उनका समर्पण नहीं कर रहे। साक्ष्यों के हिसाब से यह उनकी सेवा है। तुम उन्हें आगे बचाओगे और साथ ही उन्हें फाँसी के तख्ते से बचाओगे और सबसे बढ़ कर तुम्हारे हृदय को शांति मिलेगी। सच पूछो तो यह अच्छा सौदा है।

(कालियायेव चुप रहता है)

स्कूरातोव : बोलो?

कालियायेव : मेरे साथी तुम्हें जवाब देंगे, जल्दी ही।

स्कूरातोव : चलो, मेरा मिशन समाप्त हुआ। मेरे मन में उदासी है। लेकिन मैंने अच्छी तरह देख लिया कि तुम अपने विचारों पर दृढ़ हो। मैं तुम्हें उनसे अलग नहीं कर सका।

कालियायेव : तुम मुझे अपने साथियों से अलग नहीं कर सकते।

स्कूरातोव : अलविदा। *(वह जाने का भाव दिखाता है लेकिन वापस आता है)* अगर ऐसा ही है तो तुमने ग्रैंड डचेस और उनके भतीजों को क्यों बचा दिया?

कालियायेव : यह तुम्हें किसने कहा?

स्कूरातोव : जिनसे तुम्हें सूचनाएँ मिलती हैं वे हमें भी सूचना देते हैं कम से कम इस खेल में... लेकिन तुमने उनकी जान क्यों बचा दी?

कालियायेव : इससे तुम्हें क्या मतलब?

स्कूरातोव : *(हँसते हुए)* ऐसा समझते हो? मैं तुम्हें बतला दूँगा क्यों। एक विचार

एक ग्रैंड ड्यूक की हत्या कर सकता है लेकिन उसके लिए बच्चों की हत्या तक पहुँचना कठिन होता है। यह बात तुमने अनुभव की है। यहीं एक सवाल उठता है अगर विचार बच्चों की हत्या से हिचकता है तो क्या ग्रैंड ड्यूक की हत्या जायज है?

(कालियायेव कुछ विचलित दिखाई देता है)

स्कूरातोव : खैर! मुझे जवाब मत दो, मुझे बिलकुल जवाब मत दो। तुम ग्रैंड डचेस को जवाब दोगे।

कालियायेव : ग्रैंड डचेस?

स्कूरातोव : हाँ, उनकी इच्छा तुमसे मिलने की है। दरअसल मैं खास तौर से इसीलिए आया था कि मुलाकात शायद संभव हो पाए। यह संभव है। इसमें तुम्हारे विचारों में बदलाव की भी संभावना है। ग्रैंड डचेस ईसाई हैं। धर्म, आत्मा आदि विषयों से उनका विशेष लगाव है। *(वह हँसता है)*

कालियायेव : मैं उनसे मिलना नहीं चाहता।

स्कूरातोव : मुझे अफसोस है कि वह तुमसे मिलने पर उतारू हैं इसके अलावा तुम्हें उनकी भावनाओं का सम्मान करना चाहिए। अपने पति की मृत्यु के बाद से वह पूरे होश में नहीं हैं। हम लोग उनकी इच्छा का विरोध नहीं करना चाहते। *(दरवाजे की ओर बढ़ते हुए)* अगर तुमने अपनी राय बदल दी तो मेरा प्रस्ताव मत भूलना। मैं फिर आऊँगा।

(वह जाता है; आवाज और निर्देश सुनाई पड़ते है; ग्रैंड डचेस का प्रवेश जो स्तब्ध और निश्चेष्ट दिखाई देती है; दरवाजा खुला हुआ है)

कालियायेव : तुम्हें क्या चाहिए?

ग्रैंड डचेस : *(चेहरे पर से आवरण हटाते हुए)* देखो।

(कालियायेव चुप रहता है)

ग्रैंड डचेस : एक आदमी के साथ बहुत सारी चीजें मर जाती हैं।

कालियायेव : मैं यह जानता हूँ।

ग्रैंड डचेस : *(स्वाभाविक पर धीमी आवाज में)* हत्यारे यह बात नहीं जानते। अगर जानते तो किसी को मौत के घाट कैसे उतारते?

(चुप्पी)

कालियायेव : मैंने आपको देख लिया। फिलहाल मैं अकेला रहना चाहता हूँ।

ग्रैंड डचेस : नहीं, पर मुझे तुमसे बात करनी है।

(वह सहम कर पीछे हटता है; ग्रैंड डचेस बैठ जाती है जैसे उसमें खड़े रहने की ताकत नहीं रह गई है)

मैं अब अकेली नहीं रह सकती। पहले मुझे जब कोई तकलीफ होती थी, वह मेरी तकलीफ समझ सकता था। तकलीफ सहन करना तब सहज था। अब ... नहीं, मैं अकेली नहीं रह सकती। अपने को चुप रखना...लेकिन बात करूँ तो किससे? दूसरे नहीं समझते। वे सिर्फ दुखी होने का स्वाँग करते हैं। वे, ऐसा घंटे दो घंटे कर सकते हैं। इसके बाद वे खाने या सोने चले जाते हैं। खासकर सोने। मैं सोचती हूँ कि तुम जरूर मेरे सरीखे होओगे। मुझे विश्वास है कि तुम भी सो नहीं पाते होगे और अपराध के बारे में चर्चा करने के लिए हत्यारे से बेहतर कौन हो सकता है?

कालियायेव : कौन सा अपराध? मुझे तो सिर्फ न्यायकर्म याद है।

ग्रैंड डचेस : ठीक वही बोली। तुम्हारी बोली वैसी ही है जैसी उसकी। सभी लोगों की न्याय की बात करते समय आवाज एक सी हो जाती है। वह कहा करता था 'यह न्याय है' और लोगों को चुप रहना चाहिए। शायद वह अपने को धोखे में रखता था, तुम भी अपने को धोखे में रख रहे हो...

कालियायेव : वह उस निरंतर अन्याय का प्रतिरूप था जिसने एक सदी से रूस की जनता को कराहने के लिए मजबूर किया। इसके बदले उसे सिर्फ सुविधाएँ मिलीं। मेरे मामले में अगर मैं धोखे में हूँ तो मेरा वेतन कैद और मौत है।

ग्रैंड डचेस : हाँ, तुम कष्ट सहन कर रहे हो। लेकिन उसे तुमने मार ही डाला।

कालियायेव : उसकी मृत्यु एकबारगी अचानक हो गई। ऐसी मौत तो कुछ भी नहीं है।

ग्रैंड डचेस : कुछ भी नहीं? *(धीमी आवाज में)* यह ठीक है। तुमने उसे एकबारगी मौत के घाट उतार दिया। ऐसा लगता है जैसे तुम पुलिसवालों के बीच बोल रहे हो। मैं समझती हूँ, उन्हें तुम्हारी मदद करनी चाहिए। मैं कुछ ही सेकेंड बाद पहुँची। मैंने सब देखा। जो कुछ बटोर सकती थी उन्हें एक गठरी में जमा किया। कितना खून। *(कुछ थम कर)* मेरा लबादा सफेद था।

कालियायेव : अब बस करो।

ग्रैंड डचेस : क्यों? मैं जो सच है वही कह रही हूँ। तुम्हें पता है कि मरने के दो घंटे पहले वह क्या कर रहा था? वह सोया था। सभी दिन की तरह, एक

आराम कुर्सी पर, पाँव दूसरी कुर्सी पर रख कर। वह सोया था, और तुम, उस निर्दयी संध्या में उसका इंतजार कर रहे थे... *(वह रो पड़ती है)* तुम मेरी सहायता करो।

(कालियायेव सिहर उठता है, उसका शरीर सख्त हो जाता है)

ग्रैंड डचेस : तुम नौजवान हो, तुम बुरे नहीं हो सकते।

कालियायेव : मुझे नौजवान बनने का समय नहीं मिला।

ग्रैंड डचेस : तुम इतना कठोर क्यों बन गए हो? क्या तुम्हें कभी खुद पर तरस नहीं आया?

कालियायेव : नहीं।

ग्रैंड डचेस : तुम भूल कर रहे हो। इससे राहत मिलेगी। मुझे अब सिर्फ अपने पर तरस आता है। *(कुछ रुक कर)* मैं बुरी हूँ। मुझे बचाने के बजाय मुझे भी उसी के साथ मार देना चाहिए था।

कालियायेव : मैंने तुम्हें नहीं बचाया बल्कि उन बच्चों को जो तुम्हारे साथ थे।

ग्रैंड डचेस : मैं जानती हूँ... मुझे उनसे बहुत प्यार नहीं था। *(कुछ रुक कर)* वे ग्रैंड ड्यूक के भतीजे थे। क्या वे भी अपने चाचा की तरह दोषी नहीं थे?

कालियायेव : नहीं।

ग्रैंड डचेस : क्या तुम उन्हें जानते थे? मेरी भतीजी बुरे दिलवाली थी। वह अपने हाथ से गरीब लोगों को दान देने से इनकार करती थी। उसे उनके स्पर्श से डर लगता था। क्या यह अनुचित नहीं था? वह अन्यायी थी। ग्रैंड ड्यूक को कम से कम किसानों से लगाव था। वह उनके साथ पीता था और तुमने उसे मार दिया। दरअसल तुम भी अन्यायी हो। धरती वीरान हो गई है।

कालियायेव : यह सब कहना निरर्थक है। तुम मुझे कमजोर व असहाय बनाना चाहती हो। तुम इसमें सफल नहीं होओगी। मुझे छोड़ दो।

ग्रैंड डचेस : क्या तुम मेरे साथ प्रार्थना नहीं करोगे, पश्चाताप... हम तब बिलकुल अकेले नहीं होंगे।

कालियायेव : मुझे मरने की तैयारी के लिए छोड़ दो। अगर मैं मरता नहीं हूँ तभी मैं हत्यारा होऊँगा।

ग्रैंड डचेस : *(वह उठ खड़ी होती है)* मरना? तुम मरना चाहते हो? नहीं, नहीं *(वह कालियायेव के पास परेशान दिखती हुई आती है)* तुम्हें जिंदा रह कर एक हत्यारा बने रहने को तैयार रहना चाहिए। क्या तुमने उसकी हत्या

नहीं की है? तुम्हारा फैसला भगवान के हाथ में है।

कालियायेव : कौन सा भगवान, तुम्हारा कि मेरा?

ग्रैंड डचेस : चर्च का भगवान।

कालियायेव : उन्हें इन सबसे कोई वास्ता नहीं।

ग्रैंड डचेस : उन्हें एक स्वामी की तलाश है, वैसे स्वामी की जिसने कैद को जाना हो।

कालियायेव : समय बदल चुका है और संत चर्च ने विरासत में अपना स्वामी चुन लिया है।

ग्रैंड डचेस : चुन लिया है, तुम क्या कहना चाहते हो?

कालियायेव : उसने अनुकंपा अपने लिए रख ली है और हम लोगों के जिम्मे लोगों की सहायता का काम छोड़ दिया है।

ग्रैंड डचेस : कौन से हम लोग?

कालियायेव : *(चिल्लाते हुए)* वे सारे लोग जिन्हें तुम फाँसी देते हो।

(चुप्पी)

ग्रैंड डचेस : *(मधुर स्वर में)* मैं तुम्हारी शत्रु नहीं।

कालियायेव : *(निराश भाव से)* तुम हो, तुम्हारी नस्ल और तुम्हारे कुल के लोगों की तरह। हत्यारा होने से भी बुरी एक दूसरी चीज है, उन लोगों को हत्यारा बनने के लिए मजबूर करना जो इस काम के लिए नहीं बने थे। मेरी ओर देखो। यकीन करो, मैं हत्या के लिए नहीं बना था।

ग्रैंड डचेस : मुझसे ऐसे बात मत करो मानो मैं शत्रु होऊँ। देखो, *(वह दरवाजा बंद करने जाती है)* मुझे तुम पर भरोसा है। *(वह रो पड़ती है)* खून हम लोगों को जुदा करता है। लेकिन तुम ईश्वर के यहाँ पुनः मेरे साथ हो सकते हो, उसी आपदा-स्थल पर। कम से कम मेरे साथ प्रार्थना तो करो।

कालियायेव : मैं इनकार करता हूँ। *(वह उसकी ओर बढ़ता है)* मेरे दिल में तुम्हारे लिए सिर्फ सहानुभूति है और तुमने मेरे दिल को छू लिया है। फिलहाल तुम मुझे समझो क्योंकि मैं तुमसे कुछ भी छिपाऊँगा नहीं। मैं ईश्वर से साक्षात्कार को कोई महत्व नहीं देता। लेकिन मर कर मैं बिलकुल उनके सान्निध्य में होऊँगा जिनसे मुझे प्यार है, मेरे वे दोस्त जो इस क्षण मेरे बारे में सोच रहे हैं। प्रार्थना करना उनके साथ गद्दारी होगी।

ग्रैंड डचेस : तुम क्या कहना चाहते हो?

कालियायेव : *(उल्लासपूर्वक)* कुछ नहीं, सिवाय इसके कि मैं आनंदित होने जा रहा

हूँ। मुझे एक लंबे संघर्ष में सफल होना है और मैं सफल होऊँगा। लेकिन जब फैसला सुना दिया जाएगा और फाँसी की तैयारी हो जाएगी तब फाँसी के तख्ते पर पहुँच कर मैं अपनी निगाह तुमसे और इस घिनौनी दुनिया से फेर लूँगा और उस प्यार की ओर प्रस्थान करूँगा जो मुझे आच्छादित कर रहा है। क्या मुझे समझ रही हो?

ग्रैंड डचेस : ईश्वर से अलग कोई प्रेम नहीं है।

कालियायेव : हाँ, है, जीवों के प्रति प्रेम।

ग्रैंड डचेस : जीव हीन हैं। उनके साथ उन्हें नष्ट करने या क्षमा करने के सिवाय और क्या किया जा सकता है?

कालियायेव : उनके साथ मरना।

ग्रैंड डचेस : कोई अकेला ही मरता है। वह अकेला ही मरा।

कालियायेव : *(हताशा के साथ)* उसके साथ मरना। जो उससे आज भी प्यार करते हैं अगर वे उसके साथ एक होना चाहते हैं तो उन्हें साथ ही मरना चाहिए। अन्याय अलग करता है, शर्म, दुख और अपराध अलग करते हैं। अलगाव में जिंदा रहना एक यातना है।

ग्रैंड डचेस : ईश्वर फिर एक करता है।

कालियायेव : इस धरती पर नहीं और मेरा मिलन बिंदु यह धरती है।

ग्रैंड डचेस : यह कुत्ते का मिलन है, नाक हरदम जमीन में, बार-बार सूँघना और बार-बार निराश होना।

कालियायेव : *(खिड़की की ओर मुड़ कर)* मुझे जल्दी ही यह पता चल जाएगा। *(कुछ रुक कर)* लेकिन क्या ऐसी कल्पना नहीं की जा सकती कि दो जन जिन्होंने सभी सुखों का परित्याग कर दिया है, दुख-दर्द में एक-दूसरे से प्यार करें और उनका मिलन बिंदु भी दुख ही हो? *(वह उसकी ओर देखता है)* क्या यह कल्पना नहीं की जा सकती कि एक ही रस्सी दोनों को साथ कर दे?

ग्रैंड डचेस : यह दारुण प्रेम कौन सा है?

कालियायेव : तुम और तुम्हारे लोगों ने सिर्फ जिसका मौका दिया है।

ग्रैंड डचेस : मैं भी उससे प्यार करती थी जिसे तुमने मार डाला है।

कालियायेव : मैं यह समझता हूँ। इसीलिए मैं तुम्हें उन ज्यादतियों के लिए क्षमा करता हूँ जो तुमने और तुम्हारे लोगों ने मेरे साथ की है। *(रुक कर)* अब मुझे छोड़ दो।

(लंबी चुप्पी)

ग्रैंड डचेस : *(उठ खड़ी होती है)* मैं तुम्हें छोड़ रही हूँ। लेकिन मैं यहाँ तुम्हें ईश्वर के करीब लाने के लिए आई थी। अब मैं यह जानती हूँ कि तुम अकेले ही फैसला करना और फिर अपने को मुक्त करना चाहते थे। लेकिन तुम यह नहीं कर सकते। अगर तुम जिंदा रहे तो ईश्वर यह कर सकता है। मैं तुम्हारी माफी की माँग करूँगी।

कालियायेव : मैं तुमसे प्रार्थना करता हूँ कि ऐसा मत करना। मुझे मरने दो नहीं तो मैं तुमसे मर्मांतक नफरत करूँगा।

ग्रैंड डचेस : *(दरवाजे से)* मैं मनुष्य और ईश्वर दोनों से तुम्हारी माफी की माँग करूँगी।

कालियायेव : नहीं, नहीं, मैं मना करता हूँ।

(वह दरवाजे की ओर दौड़ता है जहाँ वह अचानक स्कूरातोव को देखता है; कालियायेव पीछे हट आँखें मूँद लेता है; खामोशी; वह फिर दुबारा स्कूरातोव पर नजर डालता है)

कालियायेव : मुझे तुम्हारी जरूरत थी।

स्कूरातोव : मैं अत्यंत आभारी हूँ। किसलिए?

कालियायेव : मुझे फिर से हिकारत के भाव की जरूरत थी।

स्कूरातोव : अफसोस की बात है। मैं तो अपना जवाब पाने आया था।

कालियायेव : वह तो तुम्हें अभी मिल गया।

स्कूरातोव : *(आवाज बदलते हुए)* नहीं, अभी तक मुझे नहीं मिला है। ठीक से सुन लो। मैंने ग्रैंड डचेस के साथ इस साक्षात्कार की व्यवस्था इसलिए कराई थी ताकि मैं कल अखबारों में यह छपवा दूँ। उनमें छपी खबरें एक बिंदु को छोड़ बिलकुल ठीक होंगी। उनमें तुम्हारे पश्चाताप का विवरण होगा। तुम्हारे साथियों को ऐसा लगेगा कि तुमने उनके साथ गद्दारी की है।

कालियायेव : *(शांत भाव से)* वे इस पर विश्वास नहीं करेंगे।

स्कूरातोव : हम खबर के प्रकाशन को उसी हालत में रोकेंगे जब तुम अपना कबूलनामा दे दो। निर्णय लेने के लिए तुम्हारे पास पूरी रात है। *(वह दरवाजे की ओर बढ़ता है)*

कालियायेव : *(दृढ़ आवाज से)* वे इस पर यकीन नहीं करेंगे।

स्कूरातोव : क्यों? क्या उन्होंने कभी कोई पाप नहीं किया है।

कालियायेव : तुम्हें उनके प्यार का अंदाज नहीं है।

स्कूरातोव : नहीं, पूरी रात बिना एक मिनट के संदेह के कोई भाईचारे पर विश्वास रख सकता है? मैं इस सवाल का जवाब जानता हूँ। मैं संदेह की उस घड़ी का इंतजार करूँगा। *(वह अपने पीछे दरवाजा बंद कर देता है)* तुम्हें जल्दी की जरूरत नहीं। मुझमें धीरज है।

(वे दोनों आमने-सामने हैं)

(परदा गिरता है)

दृश्य : पाँच

(एक दूसरा कमरा लेकिन एक ही तरह का; एक सप्ताह बाद रात का समय)

(दोरा बेचैनी से टहल रही है)

अन्नेकोव : आराम करो, दोरा।

दोरा : मुझे ठंड लग रही है।

अन्नेकोव : यहाँ आकर लेट जाओ, अपने को ढँक लो।

(दोरा टहल रही है)

दोरा : रात लंबी है। मुझे कितनी ठंड लग रही है, बोरिया।

(दरवाजे पर दस्तक; दुबारा दस्तक; अन्नेकोव दरवाजा खोलने जाता है; स्तेपान प्रवेश करता है; वोइनोव दोरा की तरफ बढ़ उसे गले लगाता है; वह उससे लिपट जाती है)

दोरा : अलेक्सी।

स्तेपान : औरलोव ने बताया कि यह आज रात ही हो। सभी नीचे के अफसर जो ड्यूटी पर नहीं थे बुलाए गए हैं। इससे वह मौजूद रहेगा।

अन्नेकोव : वह तुमसे कहाँ मिला?

स्तेपान : वह हम लोगों के, वोइनोव और मेरे इंतजार में एक के रेस्तराँ में था।

दोरा : *(जो निढाल बैठी है)* सब कुछ इसी रात के लिए था बोरिया।

अन्नेकोव : सब कुछ खतम नहीं हुआ है, अंतिम निर्णय जार का होगा।

स्तेपान : यह जार पर तब निर्भर करेगा जब यानेक माफी की याचना करेगा।

दोरा : यह याचना वह नहीं करेगा।

स्तेपान : वह ग्रैंड डचेस से क्यों मिला अगर उसे माफी नहीं माँगनी थी? डचेस ने यह बात फैलाई है कि उसे पश्चाताप है। सच्चाई का पता कैसे लगे?

दोरा : हम लोग जानते हैं कि उसने अदालत के सामने क्या कहा था और हम

लोगों को क्या लिखा था? यानेक ने कहा था कि उसे इस बात का खेद है कि तानाशाही के प्रतिरोध में वह सिर्फ एक लाश उनके सामने फेंक पाया? जो ऐसा बयान दे सकता है क्या वह माफी की याचना कर सकता है? पश्चाताप कर सकता है? नहीं, उसकी इच्छा मृत्यु को वरण करने की थी, वह मरना चाहता है। उसने जो किया है उसे नकार नहीं सकता।

स्तेपान : उसने ग्रैंड डचेस से मुलाकात कर भूल की।

दोरा : यह निर्णय लेना उसी का मामला था।

स्तेपान : हमारे नियम के अनुसार उसे नहीं मिलना चाहिए था।

दोरा : हमारा नियम सिर्फ मारने तक का है, इससे ज्यादा नहीं। अब वह आजाद है, वह अंत में आजाद है।

स्तेपान : अभी भी नहीं।

दोरा : वह आजाद है। मौत की घड़ी में उसे जो वह चाहता है करने की आजादी है। वह मरने जा रहा है, अब संतुष्ट हो लो।

अन्नेकोव : दोरा।

दोरा : लेकिन हाँ। अगर उसे क्षमा मिलती हैतो यह साबित करेगा कि ग्रैंड डचेस ने सच बात कही है कि उसने पश्चाताप जताया है और उसने गद्दारी की है। अगर, इसके विपरीत वह मरता है तो तुम उस पर विश्वास करोगे और पुनः उससे प्यार करोगे। *(वह उन लोगों को देखती है)* तुम्हारा प्यार बड़ा महँगा है।

वोइनोव : *(दोरा के पास आता है)* नहीं, दोरा हमें कभी उसके बारे में संदेह नहीं था।

दोरा : *(तेजी से टहलते हुए)* हाँ... शायद,.. मुझे क्षमा करो। आखिर क्या फरक पड़ता है। आज रात हमें सब मा़लूम हो जाएगा। बेचारे अलेक्सी, तुम यहाँ क्या करने आ गए?

वोइनोव : उसका स्थान लेने। मैं रो पड़ा। अदालत में उसका बयान सुन मैं गर्व से भर गया। जब मैंने पढ़ा : 'मेरी मौत खून और आँसू से भरी इस दुनिया के विरोध में सबसे बड़ा प्रतिरोध होगा' तो मैं काँपने लगा।

दोरा : आँसुओं और खून की दुनिया ... उसने यह कहा, यह सत्य है।

वोइनोव : उसने यह कहा... कैसा साहस। और आखिर में उसका महान उद्घोष, 'अगर मैं हिंसा के विरुद्ध प्रतिरोध के शिखर पर हूँ तो मेरी मौत मेरे

काम को इस विचार के निर्मल किरीट से सँवार दे।' इसके बाद ही मैंने यहाँ आने का फैसला किया।

दोरा : *(वह अपने सिर को हाथों में थाम लेती है)* वह मतलब वह निर्मलता की तलाश में था। कितना भयावह किरीट धारण!

वोइनोव : दोरा, रोओ मत। उसने इच्छा जाहिर की कि कोई भी उसकी मौत पर आँसू न बहाए। अब मैं उसे भलीभाँति समझता हूँ। मैं उस पर अविश्वास नहीं कर सकता। मेरे कष्ट का कारण मेरी कायरता थी। और मैंने तिफलिस में बम फेंका था। अब मैं यानेक से भिन्न नहीं हूँ। जब मुझे उसकी सजा की खबर मिली तो मुझे एक ही खयाल आया उसकी जगह लेने का क्योंकि मैं उसकी बगल में नहीं रह पाया।

दोरा : इस रात उसकी जगह कौन ले सकता है। वह अकेला होगा, अलेक्सी।

वोइनोव : हमें अपने गर्व को बनाए रखना है जैसा उसने अपने उदाहरण से हमें सहारा दिया है। रोओ मत।

दोरा : देखो। मेरी आँखें सूखी हैं। लेकिन गर्व! मुझे कभी भी आगे गर्व नहीं हो सकता।

स्तेपान : दोरा, मुझे बुरा मत समझना। मैं चाहता हूँ कि यानेक जीवित रहे। हमें उस जैसे लोगों की जरूरत है।

दोरा : लेकिन वह यह नहीं चाहता था। और हमें भी उसकी मौत की कामना करनी चाहिए।

अन्नेकोव : तुम पागल हो।

दोरा : हमें यह कामना करनी चाहिए। मैं उसके दिल को जानती हूँ। उसे इसी से शांति मिलेगी कि वह मरे! *(धीमी आवाज में)* लेकिन वह जल्दी मरे।

स्तेपान : बोरिया, मैं चलता हूँ। अलेक्सी आओ। औरलोव हमारी प्रतीक्षा में है।

अन्नेकोव : हाँ, और वापस आने में देर मत करना।

(स्तेपान और वोइनोव दरवाजे की ओर जाते हैं; स्तेपान दोरा की ओर देखता है)

स्तेपान : हम लोग खबर लेने जा रहे हैं। उस पर ध्यान रखना।

(दोरा खिड़की पर है; अन्नेकोव की निगाह उस पर है)

दोरा : मौत। फाँसी। फिर मौत। ओह। बोरिया।

अन्नेकोव : हाँ, प्यारी बहन। लेकिन दूसरा समाधान भी नहीं है।

दोरा : ऐसा मत कहो। अगर मौत ही एकमात्र समाधान है तो फिर हम सही रास्ते पर नहीं हैं। सही राह वह है जो जिंदगी की ओर ले जाय, रोशनी की ओर, जिसमें अविराम ठंड से जमना न पड़े।

अन्नेकोव : वह भी जीवन की ओर ले जाता है। दूसरों के जीवन की ओर। रूस जिंदा रहेगा, हमारे छोटे बच्चे जीवित रहेंगे। तुम्हें याद है यानेक ने क्या कहा था 'रूस सुखी रहेगा।'

दोरा : दूसरे, हमारे छोटे बच्चे... हाँ। लेकिन यानेक कैदखाने में है और फाँसी की डोरी ठंडी है। वह मरने जा रहा है। शायद वह अब तक मर चुका है ताकि दूसरे जीएँ। ओह, बोरिया अगर दूसरे नहीं जीते हैं तो? फिर उसकी मृत्यु अर्थहीन है?

अन्नेकोव : तुम चुप रहो।

(चुप्पी)

दोरा : कितनी ठंड है, हालाँकि अभी बसंत है। कैदखाने के अहाते में पेड़ हैं, मुझे मालूम है। वह उन्हें जरूर देख रहा होगा।

अन्नेकोव : खबर की प्रतीक्षा करो। इस तरह काँपो मत।

दोरा : मैं इतनी सर्द हूँ कि मुझे लगता है कि मैं मर चुकी हूँ। *(कुछ रुक कर)* घटनाओं ने हमें इतनी जल्दी उम्रदराज बना दिया है। बोरिया हम फिर कभी बच्चे नहीं होंगे। पहली ही हत्या में बालपन भाग जाता है। मैं एक बम फेंकती हूँ और सेकेंड भर में एक जीवन समाप्त हो जाता है। आगे हम मरे हुए ही हैं। हमने जीवन में जल्दी ही सब कुछ देख लिया है।

अन्नेकोव : वैसी स्थिति में, जैसा आदमी को करना चाहिए हम संघर्ष करते मरेंगे।

दोरा : तुम बहुत पहले आ गए। तुम आदमी रहे नहीं।

अन्नेकोव : बुरा समय और दुख भी जल्दी ही आ जाते हैं। इस संसार में धीरज का और परिपक्व होने का वक्त नहीं मिलता। रूस जल्दी में है।

दोरा : मैं जानती हूँ। हम लोगों ने अपने ऊपर संसार भर का दुख ले रखा है। उसने भी इसे ले रखा था। क्या साहस! लेकिन मुझे कभी-कभी लगता है कि यह एक अहं है जिसकी सजा भुगतनी होगी।

अन्नेकोव : यह एक अहं है जिसकी कीमत हम अपनी जान से चुकाते हैं। आगे कोई नहीं जा सकता। यह एक अहं है जिसके हम अधिकारी हैं।

दोरा : क्या हम लोग आश्वस्त हैं कि इससे आगे कोई नहीं जा सकता? कभी-कभी जब मैं स्तेपान को सुनती हूँ तो मुझे भय होता है। दूसरे आएँगे जो हमसे हत्या का अधिकार पाने का दावा करेंगे लेकिन वे स्वयं अपनी जान से इसकी कीमत नहीं चुकाएँगे।

अन्नेकोव : यह कायरता होगी दोरा।

दोरा : कौन कह सकता है। शायद यही न्याय हो। इससे भी बढ़ कर कोई भी उनका सामना करने का साहस नहीं करेगा।

अन्नेकोव : दोरा।

(वह चुप रहती है)

अन्नेकोव : क्या तुम्हें संदेह होने लगा है? मेरे लिए तुम अपरिचित बन गई हो।

दोरा : मैं ठिठुर रही हूँ। मैं उसके बारे में सोच रही हूँ जो थर्राता नहीं है, जो भयभीत होता नहीं दिखता।

अन्नेकोव : क्या तुम अब हम लोगों के साथ नहीं हो?

दोरा : *(अपने को उस पर फेंकते हुए)* आह बोरिया मैं तुम लोगों के साथ हूँ। मैं आखिरी सीमा तक तुम लोगों के साथ जाऊँगी। मुझे तानाशाही से नफरत है और मुझे पता है कि हम लोग दूसरा कुछ नहीं कर सकते। लेकिन मैंने यह रास्ता उमंग भरे दिल से चुना था और आज मेरा दिल उदासी से भरा है। यही फरक है। हम लोग बंदी हैं।

अन्नेकोव : सारा रूस एक कारागार है। हम इसकी दीवारों को ध्वस्त कर टुकड़े-टुकड़े कर देंगे।

दोरा : मुझे सिर्फ बम फेंकने को दे दो और फिर देखना। मैं भट्टी के बीच से बढ़ूँगी पर मेरे कदम दृढ़ रहेंगे। यह आसान है। यह मौत कहीं अधिक आसान है बनिस्बत जीवन के इस द्वंद्व से। बोरिया क्या तुमने प्यार किया है? क्या तुमने एकांतिक प्यार किया है?

अन्नेकोव : हाँ, मैंने प्यार किया है लेकिन इतना पहले कि मुझे अब उसकी स्मृति नहीं।

दोरा : कितना पहले।

अन्नेकोव : चार साल पहले।

दोरा : तुमने संगठन को कितने दिन चलाया है?

अन्नेकोव : चार साल *(रुक कर)* अब मैं संगठन से प्यार करता हूँ।

दोरा : *(खिड़की की ओर बढ़ती हुई)* हाँ प्यार करना, पर प्यार किया जाना। नहीं, कदम बढ़ते जाना है। इच्छा रुकने की होती है। बढ़ते जाना। बढ़ते जाना। इच्छा हाथ पकड़ चलने के लिए छोड़ देने की होती है। लेकिन घृणित अन्याय हमारे ऊपर गोंद की तरह चिपक जाता है। बढ़ते जाना। हम अपनी औकात से बड़ा बनने के लिए अभिशप्त हैं। दूसरे, दूसरे

चेहरे, वे हैं जिनसे हम प्यार करना चाहते हैं। न्याय से बढ़ कर प्रेम। नहीं, बढ़ते जाना जरूरी है। बढ़ो दोरा! बढ़ो यानेक! *(वह रोने लगती है)* लेकिन उसके लिए तो अब अंत करीब है।

अन्नेकोव : *(उसे बाहों में समेटते हुए)* उसे माफी मिल जाएगी।

दोरा : *(उसकी ओर देख कर)* तुम अच्छी तरह जानते हो कि यह नहीं होगा। तुम अच्छी तरह जानते हो कि ऐसा नहीं होना चाहिए। *(वह नजर घुमा लेती है)*

दोरा : शायद अब तक वे अहाते में चले आए होंगे। ऐसा लगता है कि सारा संसार एकाएक चुप हो गया है। वह ठिठुरे नहीं, इसकी व्यवस्था। बोरिया, क्या तुम जानते हो फाँसी कैसे दी जाती है?

अन्नेकोव : एक डोरी के छोर पर। बस करो, दोरा।

दोरा : *(अंधे की तरह)* जल्लाद उसके कंधे पर सवार हो जाता है, गरदन टूट जाती है। कितना भयावह है?

अन्नेकोव : हाँ, एक अर्थ में। दूसरे अर्थ में यह आनंद की घड़ी है।

दोरा : आनंद?

अन्नेकोव : मरने के पहले एक मानव हाथ का स्पर्श।

(दोरा एक आरामकुर्सी पर धम से गिर जाती है)

अन्नेकोव : अब हमें यहाँ से जाना चाहिए। हम लोग थोड़ा विश्राम कर लेंगे।

दोरा : *(अन्यमनस्क)* जाना? किसके साथ?

अन्नेकोव : मेरे साथ, दोरा।

दोरा : *(उसे देखती है)* जाना। *(वह खिड़की की तरफ मुड़ती है)* सुबह हो गई। यानेक मर चुका है, मुझे यकीन है।

अन्नेकोव : हम तुम्हारे मित्र हैं।

दोरा : हाँ, तुम मेरे मित्र हो और तुम सब मेरे मित्र हो जिनसे मुझे प्यार है। *(बूँदा-बूँदी की आवाज, दिन उठने लगा; दोरा धीमी आवाज में बोलती है)* लेकिन मैत्री का घूँट कभी-कभी कितना भयावह होता है।

(दस्तक; वोइनोव और स्तेपान का प्रवेश; सभी गुमसुम हैं; दोरा चौंकती है लेकिन वह फिर स्पष्ट दिखनेवाले प्रयास से अपने को संयमित करती है)

स्तेपान : *(धीमी आवाज में)* यानेक ने गद्दारी नहीं की।

अन्नेकोव : क्या औरलोव सब कुछ देख सका?

स्तेपान : हाँ।

दोरा : *(दृढ़ कदम से बढ़ते हुए)* बैठो, और सब कुछ बताओ।

स्तेपान : क्या फायदा?

दोरा : सब कुछ कहो, मुझे जानने का हक है। मेरी आरजू है कि तुम सुनाओ। विस्तार से सुनाओ।

स्तेपान : मैं यह नहीं कर सकता और फिर अभी हमें जाना भी है।

दोरा : नहीं, तुम बताओगे। तुम्हें सूचना कब मिली?

स्तेपान : शाम को दस बजे।

दोरा : उसे फाँसी कब दी गई?

स्तेपान : सुबह दो बजे।

दोरा : और बीच में चार घंटे वह इंतजार में रहा।

स्तेपान : हाँ, बिना एक शब्द बोले। इसके बाद सब कुछ हुआ। अब सब कुछ समाप्त है।

दोरा : चार घंटे निःशब्द? थोड़ा रुको। उसने क्या पोशाक पहनी थी? क्या उसने रोएँदार कोट पहना था?

स्तेपान : नहीं, वह सिर्फ काले वस्त्रों में था, सिर पर एक काली फेल्ट टोपी थी।

दोरा : समय कैसा था?

स्तेपान : काली रात। बर्फ को वर्षा ने चिपचिपी कीचड़ में बदल दिया था।

दोरा : क्या वह काँप रहा था?

स्तेपान : नहीं।

दोरा : क्या औरलोव से उसकी निगाह मिली थी?

स्तेपान : नहीं।

दोरा : उसकी नजर कहाँ थी?

स्तेपान : औरलोव के अनुसार सारे संसार पर थी बिना कुछ देखे।

दोरा : फिर, फिर?

स्तेपान : छोड़ो! दोरा।

दोरा : नहीं, मैं जानना चाहती हूँ। उसकी मौत एक हद तक मेरी है।

स्तेपान : उसे फैसला सुनाया गया।

दोरा : उस समय वह क्या कर रहा था?

स्तेपान : कुछ नहीं। सिर्फ एक बार उसने अपना घुटना हिलाया, कीचड़ को बूट से हटाने भर के लिए।

दोरा : *(सिर हाथ में थामे)* थोड़ा कीचड़।

अन्नेकोव : *(तेज स्वर में)* तुम्हें यह कैसे मालूम?

(स्तेपान चुप रहता है)

अन्नेकोव : तुमने सब कुछ औरलोव से पूछा? क्यों?

स्तेपान : *(आँख फेरते हुए)* मेरे और यानेक के बीच कुछ बातें थीं।

अन्नेकोव : आखिर क्या?

स्तेपान : मुझे उससे ईर्ष्या थी।

दोरा : इसके बाद, स्तेपान, इसके बाद?

स्तेपान : फादर फलोरेस्की उसके सामने क्रास ले आया। उसने उसे लेने से इंकार कर दिया और घोषणा की 'मैं तुम्हें पहले ही कह चुका हूँ कि मैं जीवन से नाता तोड़ चुका हूँ और मृतकों की श्रेणी में शामिल हो गया हूँ।'

दोरा : उसकी आवाज कैसी थी?

स्तेपान : बिलकुल परिचित। जिससे तुम परिचित हो।

दोरा : क्या वह अतीव प्रसन्न लगता था?

अन्नेकोव : तुम पागल हो?

दोरा : हाँ, हाँ मुझे विश्वास है वह अतीव प्रसन्न था। यह अनुचित होता कि बलिदान के लिए जीवन में सुख का परित्याग कर मरने की घड़ी में वह आनंद नहीं पाता। वह अतीव प्रसन्न था और फाँसी के तख्ते पर शांतचित्त चढ़ गया। यही बात है न?

स्तेपान : वह मार्च कर रहा था और नीचे नदी पर कोई एकॉर्डियन बजा रहा था। उसी समय कुत्ते भौंक रहे थे।

दोरा : वह इसी तरह... पर चढ़ा।

स्तेपान : वह चढ़ा। जल्लाद ने जिस बड़े परदे से उसे ढँका था, वह धुँधला सा दिख रहा था।

दोरा : और फिर, और फिर...

(स्तेपान चुप हो जाता है)

दोरा : *(जोर से)* इसके बाद, मैं पूछ रही हूँ *(स्तेपान चुप रहता है)* अलेक्सी बोलो इसके बाद?

वोइनोव : एक भयंकर शोर।

(दोरा दीवार से टकराती है; स्तेपान सिर फिरा लेता है; अन्नेकोव बिना किसी भाव के रोने लगता है; दोरा घूमती है और दीवार का सहारा लेती हुई ही उन्हें देखती है)

दोरा : *(एक बदली हुई आवाज में अन्यमनस्क)* रोओ मत। नहीं, नहीं रोओ

मत। तुमने पूरी तरह देख लिया कि यह दिन उसकी सिद्धि का था। इसी घड़ी कुछ ऐसा हुआ जो इस बात का सबूत है कि हम विद्रोही हैं। यानेक कोई हत्यारा नहीं। एक भयानक आवाज। एक भयानक आवाज के साथ शैशव के आनंद में वापसी। क्या तुम्हें उसकी हँसी याद है? कभी-कभी वह बेवजह हँसता था जैसे कि वह युवा हो। वह अब हँस सकता है, धरती की तरफ मुँह फेरे। *(वह अन्नेकोव की तरफ जाती है)*

दोरा : बोरिया, तुम मेरे मित्र हो? तुमने कहा कि तुम मेरी मदद करोगे?

अन्नेकोव : हाँ।

दोरा : तो मेरे लिए यह करो। मुझे बम दो।

(अन्नेकोव उसे देखता है)

दोरा : हाँ, अगली बार। मैं फेंकना चाहती हूँ। मैं फेंकने में पहले रहना चाहती हूँ।

अन्नेकोव : तुम अच्छी तरह जानती हो कि हम लोग औरतों को अगली कतार में नहीं रखते।

दोरा : *(चिल्लाहट के स्वर में)* क्या मैं अभी एक औरत हूँ?

(वे उसकी ओर देखते हैं, खामोशी)

वोइनोव : *(धीमे स्वर में)* मान लो बोरिया।

स्तेपान : हाँ, मान लो।

अन्नेकोव : यह तुम्हारी बारी है स्तेपान।

स्तेपान : *(दोरा की ओर देखते हुए)* मान लो, इस समय वह मेरे सरीखा है।

दोरा : तुम मुझे दोगे, है न? मैं उसे फेंकूँगी। और फिर, बाद में एक ठंडी रात में..

अन्नेकोव : ठीक है दोरा।

दोरा : *(दोरा रो पड़ती है)* यानेक। एक ठिठुरन भरी रात और वही डोरी। सब कुछ अब इतना आसान होगा।

(परदा गिरता है)